मूल्य : 25 रुपये
जुलाई - सितम्बर, 2021

वर्ष : 10, अंक : 41

नर्मदा समग्र

फोटो - मुकुल यादव

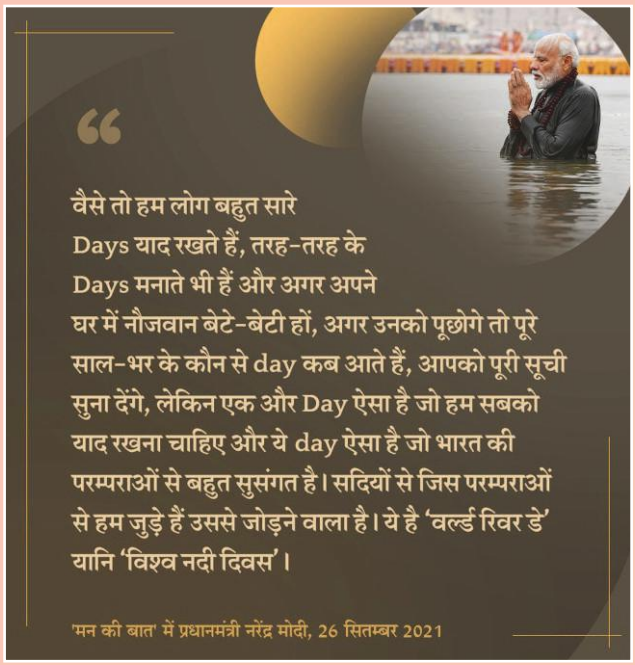
वैसे तो हम लोग बहुत सारे
Days याद रखते हैं, तरह-तरह के
Days मनाते भी हैं और अगर अपने
घर में नौजवान बेटे-बेटी हों, अगर उनको पूछोगे तो पूरे
साल-भर के कौन से day कब आते हैं, आपको पूरी सूची
सुना देंगे, लेकिन एक और Day ऐसा है जो हम सबको
याद रखना चाहिए और ये day ऐसा है जो भारत की
परम्पराओं से बहुत सुसंगत है। सदियों से जिस परम्पराओं
से हम जुड़े हैं उससे जोड़ने वाला है। ये है 'वर्ल्ड रिवर डे'
यानि 'विश्व नदी दिवस'।
'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, 26 सितम्बर 2021

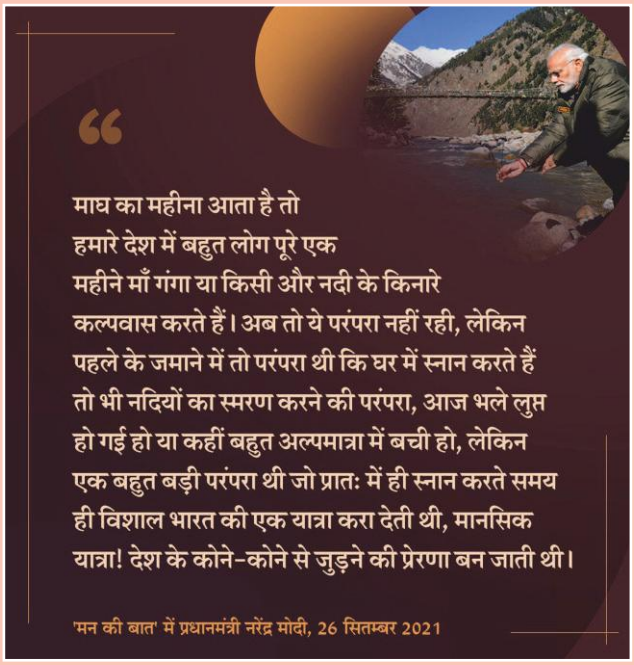
माघ का महीना आता है तो
हमारे देश में बहुत लोग पूरे एक
महीने माँ गंगा या किसी और नदी के किनारे
कल्पवास करते हैं। अब तो ये परंपरा नहीं रही, लेकिन
पहले के जमाने में तो परंपरा थी कि घर में स्नान करते हैं
तो भी नदियों का स्मरण करने की परंपरा, आज भले लुप्त
हो गई हो या कहीं बहुत अल्पमात्रा में बची हो, लेकिन
एक बहुत बड़ी परंपरा थी जो प्रातः में ही स्नान करते समय
ही विशाल भारत की एक यात्रा करा देती थी, मानसिक
यात्रा! देश के कोने-कोने से जुड़ने की प्रेरणा बन जाती थी।
'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, 26 सितम्बर 2021

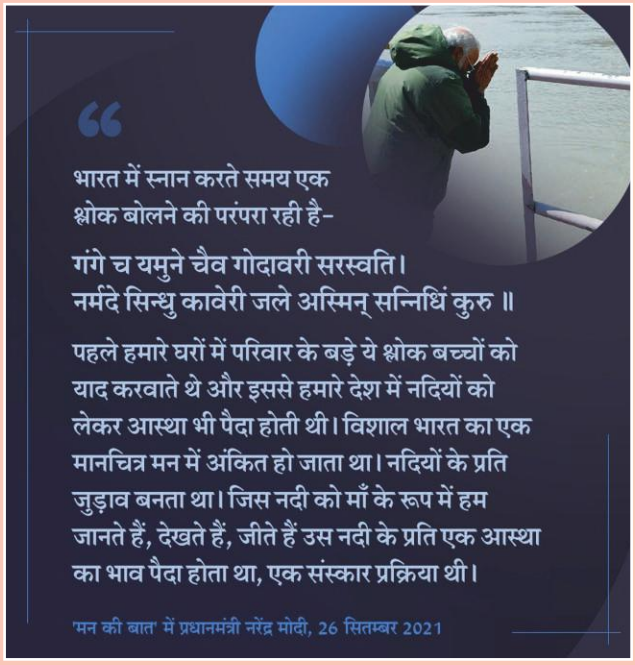
भारत में स्नान करते समय एक
श्लोक बोलने की परंपरा रही है-
गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले अस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
पहले हमारे घरों में परिवार के बड़े ये श्लोक बच्चों को
याद करवाते थे और इससे हमारे देश में नदियों को
लेकर आस्था भी पैदा होती थी। विशाल भारत का एक
मानचित्र मन में अंकित हो जाता था। नदियों के प्रति
जुड़ाव बनता था। जिस नदी को माँ के रूप में हम
जानते हैं, देखते हैं, जीते हैं उस नदी के प्रति एक आस्था
का भाव पैदा होता था, एक संस्कार प्रक्रिया थी।
'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, 26 सितम्बर 2021

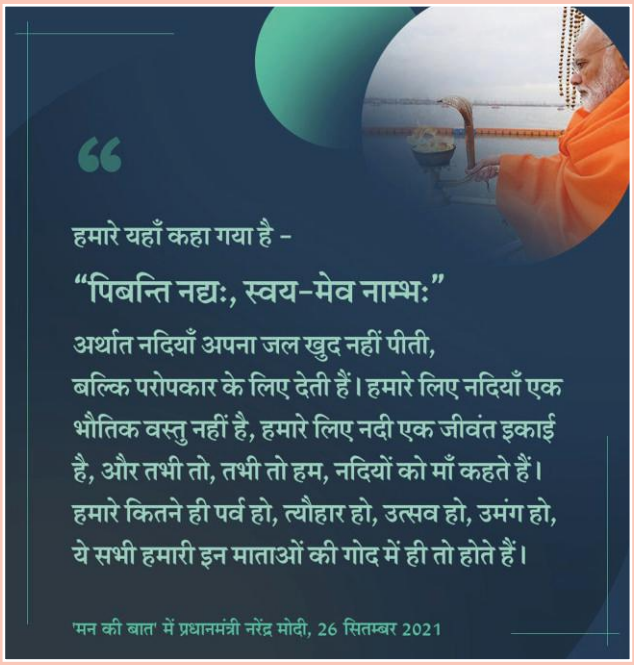
हमारे यहाँ कहा गया है -
"पिबन्ति नद्यः, स्वय-मेव नाम्भः"
अर्थात नदियाँ अपना जल खुद नहीं पीती,
बल्कि परोपकार के लिए देती हैं। हमारे लिए नदियाँ एक
भौतिक वस्तु नहीं है, हमारे लिए नदी एक जीवंत इकाई
है, और तभी तो, तभी तो हम, नदियों को माँ कहते हैं।
हमारे कितने ही पर्व हो, त्यौहार हो, उत्सव हो, उमंग हो,
ये सभी हमारी इन माताओं की गोद में ही तो होते हैं।
'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, 26 सितम्बर 2021

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 10

अंक : 41

माह : जुलाई-सितम्बर 2021

संपादक

कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल

डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन

संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

मुद्रण

नियो प्रिंटर्स

17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क

'नदी का घर' सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

तृतीय पुण्य स्मरण 6 जुलाई, 2021 अमृतलाल वेगड़

1. संपादकीय 05
2. जितनी जरूरत हो उतना पानी नदियों से लें 06
3. अमृत लाल जी वेगड़-एक अद्भुत नर्मदा अनुरागी 08
4. भारत की 13 प्रमुख नदियों की डी.पी.आर. का निर्माण 10
5. अगर आप नहीं तो कौन, अगर अभी नहीं तो कब? 11
6. नर्मदा की सहायक नदियां - वेदा, कुन्दा और बोराड़ 13
7. पर्यावरण संरक्षण और भारतीय समाधान 24
8. आईपीसीसी की हालिया रिपोर्ट ... 26
9. रोशनी की मुनादी 27
10. समुद्र में प्लास्टिक प्रदूषण फैला रही नदियाँ 25
11. नर्मदा अंचल के वृक्ष 29

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

नर्मदापुरम भाग - बांद्राभान दक्षिण घाट टोली के साथ नर्मदा समग्र के सचिव श्री करण सिंह कौशिक, मुख्य कार्यकारी श्री कार्तिक सप्रे एवं भाग समन्वयक श्री नवीन बोड़खे की बैठक हुई जिसमें घाट संबंधित विषय, कार्य-कार्यक्रम इत्यादि पर चर्चा की एवं हरियाली चुनरी का अवलोकन कर साथ ही पौधारोपण किया गया।

सम्पादकीय

माह जुलाई में श्री अमृत लाल वेगड़ जी की पुण्यतिथि थी। नर्मदा समग्र के विचार को मूर्तरुप देने पर उनका योगदान अविस्मरणीय है। वे एक पूरे संस्थान थे। उनकी लिखी किताबों से ना जाने कितने लोगों ने नर्मदा से प्रेम करना सीखा, अमृत लाल जी ने अपने शब्दों से नर्मदा का जो चित्रांकन किया वह अपूर्व है। इस चित्रांकन ने ''नदी'' को पुनः अपनी गरिमा और महिमा से आम जन के हृदय में स्थापित कर दिया। आधुनिकता और विज्ञान के कारण नास्तिकता की ओर जा रहे बहुत से लोगो के बीच आस्था के बीज रोप दिए।

वेगड़ जी की किताबों से प्रेरणा पाकर बहुत से युवाओं ने नर्मदा की परिक्रमा कर प्रकृति पर निर्भर होकर जीवन जीने का अनुभव प्राप्त किया। परिक्रमा पथ पर प्रकृति के भरोसे स्वयं को छोड़कर चलने से बहुत सी अध्यात्मिक अनुभूतियों का बोध प्राप्त किया।

प्रकृति और पर्यावरण की समस्या पूरे विश्व के सामने है। इस समस्या से मानव सहित समूचा जैविक जगत पीड़ित है। कितनी ही प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इसके बावजूद वर्तमान में मनुष्य जिस तरह की जीवन पद्धति को अपनाये हुये है, उससे यह समस्या बढ़ती ही जा रही है। इसके कारण समस्त जगत का जीवन चक्र असंतुलित हुआ है। इस असंतुलन ने धरती पर अनेकों नई समस्याओं को जन्म दिया है, जिनका हल विज्ञान के पास भी नहीं है। इस कठिन समय में यह विचार आवश्यक है, कि ऐसी कौन सी पद्धति है, जो अपने आप में पूर्ण हो। जिसको अपनाना नैसर्गिक हो, साथ ही धरती के स्वस्थ और संतुलित बनाये रखने में अपना सहयोग दे। इसके जितने भी विकल्प आज उपलब्ध उसमें वैदिक जीवन पद्धति सर्वश्रेष्ठ नजर आती है। इसमें सम्पूर्ण प्रकृति जल, जंगल, जमीन, जीव सभी के साथ सह-अस्तित्व पूर्व जीने का नजरिया प्रस्तुत किया गया है।

प्रकृति को जीवमान इकाई मानकर इसके साथ जीने की अवधारणा पर बल दिया गया है, इस विधि से जीवन यापन करने पर चारो अवस्थाओं, पदार्थ, जीव, वनस्पति, मानव के बीच संतुलन स्थापित होकर धरती पर समृद्धि पूर्वक रहा जा सकता है। आधुनिक समय में विकास ने जिन विसंगतियों और विकृतियों को जन्म दिया है, इन सभी समस्याओं का हल इसमें निहित है। □

जितनी जरूरत हो उतना पानी नदियों से लें

समाज में अगर कोई सबसे बड़ा संकट है तो विधा का संकट है। हमारे ग्रंथों में वैद्यों को निर्देश था कि अगर एक पत्ती से काम चलता है तो फूल नहीं तोड़ोगे फूल से काम चलता है तो वो फल नहीं तोहोंगे और फल से काम चलता है तो जह नहीं खोदोगे। मगर आज के वैयों को विश्वास नहीं हो रहा पूरा का पूरा पेड़ उखाड़ लाते हैं। जरूरत है एक पत्ती की ओर उर लाये पूरा पेड़ उसी में हमारा पर्यावरण नष्ट हुआ है। हमको जितना आवश्यक हो। हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए। जितने की हमको आवश्यकता है उससे तनिक भी ज्यादा नहीं। इस नर्मदा ने हमारे दादा, परदादा और परदादा के परदादा और कई परदादाओं की प्यास बुझाई लेकिन क्या यही नर्मदा हमारे बच्चों के बच्चों के बच्चों की प्यास बुझा पायेगी।

❑ **श्री अमृतलाल वेगड़**

एक नौजवान अपने घर के बाहर खड़ा था तभी युवा स्त्री गोद में एक बच्चा लिये आई और उसने कहा बेटा तुमने मुझे पहचाना नहीं उसने कहा में कैसे पहचान सकता हूँ मैंने तो तुमको पहली बार देखा है। कहने लगी मैं तुम्हारी मां हूँ, उसने कहा मां, मेरी मां इतनी युवा और मेरे मां-बाप तो 14 वर्ष पहले हिमालय चले गये थे तपस्या करने वो तुम कैसे हो सकती हो, उसने कहा हम बढ़ी है। हमारी तपस्या से प्रसन्न होकर एक ऋषि ने हमको आशीर्वाद दिया और कुछ गोलियां दी। कहा कि एक गोली खाने से तुम्हारी उम्र 25 साल कम हो जायेगी। इसलिए मैं तुम्हें युवा दिख रही है। उसने कहा ठीक है ये तो समझ में आया। फिर मेरे बाबूजी कहाँ हैं। कहने लगी कि यो गोद में हैं। उनको विश्वास नहीं हुआ कि एक गोली खाने से 25 साल उम्र कम हो जायेगी। उन्होंने 2 गोलियां खा लीं।

आज समाज में अगर कोई सबसे बड़ा संकट है तो विश्वास का संकट है। हमारे ग्रंथों में वैद्यों को निर्देश था कि अगर एक पत्ती से काम चलता है तो फूल नहीं तोड़ोगे, फूल से काम चलता है तो वो फल नहीं तोड़ोगे और फल से काम चलता है तो जड़ नहीं खोदोगे। मगर आज के वैद्यों को विश्वास नहीं हो रहा पूरा का पूरा पेड़ उखाड़ लाते हैं। जरूरत हैं एक पत्ती की और उखाड़ लाये पूरा पेड़ उसी में हमारा पर्यावरण नष्ट हुआ है। हमको जितना आवश्यक हो। हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए। जितने की हमको आवश्यकता है उससे तनिक भी ज्यादा नहीं। इस नर्मदा ने हमारे दादा परदादा और परदादा के परदादा और कई परदादाओं की प्यास बुझाई लेकिन क्या यही नर्मदा हमारे बच्चों के बच्चों के बच्चों की प्यास बुझा पायेगी। आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या यही है।

नर्मदा समग्र प्रारंभ से ही दो उद्देश्य लेकर चला है। पहला निर्मल नर्मदा, दूसरा अविरल नर्मदा अविरल बहती रहे सदा बहती रहे। नर्मदा सदा बहती रहे उसके लिये क्या किया जाये। देखिये नर्मदा के बैंक में दो एकाउंट है। एक तो है करंट एकाउंट, दूसरा सेविंग एकाउंट। यो हमको दिखाई नहीं देता लेकिन वो इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। 4 माह पानी बरस लिया। बरसात खत्म हो गई। अब जो पानी आ रहा है वह कहाँ से आ रहा है। यो पानी नर्मदा के सेविंग एकाउंट का है। उसका एक बचत खाता है। बरसात का पानी सब नहीं वह जाता। बहुत सा पानी यो संघ कर लेती है। अपने सेविंग एकाउंट में डाल देती है, फिर बाकी के आठ महीने वही पानी बहता है। अगर हम चाहते हैं कि हमारी नर्मदा अविरल बहती रहे तो हमें नर्मदा का जो सेविंग एकाउंट है, उसको बचाना होगा सेविंग एकाउंट वचत खाता विद्वानों को ऐसे शब्द अच्छे नहीं लगते उनको भारी भरकम शब्द चाहिए तो वे कहते हैं नदी का जलग्रहण क्षेत्र से वही बात है। उसको बचाना चाहिए उसको बचाने के लिए वहां पर जो पेड़ है उन पेड़ों को बचाना होगा। इन पेड़ों की जो जड़ें होती है उन जड़ों का जाल बिछा होता है। जमीन के अंदर वो पानी को रोक लेता है। वही पानी को सेविंग एकाउंट में डालती है। इसलिए पेड़ पर मीरा का बहुत प्यारा भजन है। मन चाहकर रखो रे अपने सजन से कहती है कि तुम मुझे

चाहकर रखोगे तो में तुम्हारे कौन-कौन से काम करूंगी। पहले बाग लगाऊंगी, बगीचे लगाऊंगी, पेड़-पौधे उगाऊंगी मीरा कह रही है। यही बाग पानी को वरसायेंगे, यही बाग पानी को संग्रह करेंगे और नदी को देते रहेंगे। नदी कहती है तुम मुझे जंगल दो में तुम्हें पानी दूंगी। इसलिए जंगल का कटना तो बिल्कुल बंद होना चाहिए और खूब लाखों करोड़ों की लागत में जंगल लगना चाहिए। देखो नर्मदा सबके लिए है लेकिन उसके लिए नहीं जो उसे गंदी करता है। नदी को पहले हम गंदा करें और फिर उसे साफ करें। ये कैसा उलटा काम है, नदी को हम जितनी भी साफ करें गंदगी के घाव रह जाते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम नदी को गंदा ही न करें। नदी को स्वच्छ रखें नदी को अविरल बहने दें, खूब पेड़ पौधे हो जो नदी को बचाकर रखें।

सज्जनों एक परिक्रमावासी जा रहा है। मैया के किनारे, नर्मदा जी के किनारे चलते-चलते शाम हो गई फिर रात हो गई अब उसे चिंता सताने लगी कि ऐसा न हो की धर्मशाला के दरवाजे बंद हो जायें तो कोई बात नहीं मैं बाहर पेड़ के नीचे सो लूंगा लेकिन मंदिर के दरवाजे बंद न हो मैं अपने प्रभु के बगैर नहीं रह सकता। बिना पानी के कुछ संभव नहीं है। जीवन एक पिरामिड की तरह होता है सबसे नीचे वनस्पति जगत फिर पशु पक्षी जगत और फिर मनुष्य, मनुष्य सबसे ऊपर है। मनुष्य और पशु-पक्षी जगत दोनों मिलकर वनस्पति जगत पर निर्भर रहते हैं, अगर ये पिरामिट लड़खड़ा गये। नीचे की मंजिल अगर टूट गई तो मनुष्य भी कहीं का नहीं रहेगा। देखिये मछली विना पानी के नहीं रह सकती। मछली के सामने ऊपर नीचे वायें दायें पानी ही पानी हो, हम सब भी मछलियां है, पर्यावरण की मछलियां हम पर्यावरण में उसी तरह जी रहे हैं जिस तरह से मछली पानी में, अगर पर्यावरण नहीं रहेगा हम भी नहीं रहेंगे। हम उसकी मछली है। ये

जीवन एक पिरामिड तरह होता है सबसे नीचे वनस्पति जगत फिर पशु-पक्षी जगत और फिर मनुष्य, मनुष्य सबसे ऊपर है मनुष्य और पशु-पक्षी जगत दोनों वनस्पति जगत पर निर्भर करते हैं, अगर ये पिरामिट गये। नीचे की मंजिल अगर टूट गई तो मनुष्य भी कहीं का नहीं रहेगा। इसलिए पानी बचाना, पर्यावरण को बचाना है।

जो ग्लोबल वार्मिंग है। ये ग्लोबल चेतावनी है कि संभला नहीं तो तुम्हारी पृथ्वी धू-धू कर जल उठेगी। मित्रों में अपनी बात समाप्त करता हूं उससे पहले एक बात कहना चाहता हूं में नर्मदा समय का अध्यक्ष हूं ये बात मेरे लिए बड़े गौरव की रही है। अब में 87 का हूं अगले अधिवेशन में 89 का रहूंगा अब दो बातें हो सकती है या तो 89 का रहूं या साल 6 महीने का रहूं क्योंकि हम लोगों का तो पुनर्जन्म में विश्वास है, दोनों ही स्थिति में नहीं आ सकूँगा इसलिए आप लोगों को अंतिम प्रणाम। □

- नदी महोत्सव 2015 की स्मारिका से
अमृतलाल वेगड़ जी का वक्तव्य।

(स्व. अमृतलाल वेगड़ - प्रसिद्ध नर्मदा यायावर, चित्रकार, साहित्यकार, शिक्षक, नर्मदा समग्र के संस्थापक सदस्य एवं प्रथम अध्यक्ष।)

अमृत लाल जी वेगड़ : एक अद्‌भुत नर्मदा अनुरागी

❑ विनोद शर्मा

पिछले कुछ दिनों से नर्मदा-समग्र भोपाल ''नदी के घर'' से कार्तिक सप्रे जी का संदेश आ रहा था कि विनोद जी नर्मदा-समग्र की पत्रिका का नवीन अंक आ रहा है। नर्मदा-समग्र न्यास के पूर्व अध्यक्ष अमृत लाल जी वेगड़ पर कुछ लिखकर भेजिये। इस अंक में उसे प्रकाशित करना है। मैं इसे अपनी निजी व्यस्तता कहूं या कहूं कि मैं अमृतलाल वेगड़ जी जैसे महान शब्द-शिल्पी पर लिखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। शांति निकेतन और कला निकेतन के इन महान नर्मदा-अनुरागी पर लिखने का सौभाग्य अंततः प्राप्त हुआ। इसे ईश्वरीय कृपा कहूं या संयोग कि जबलपुर के जिस कला निकेतन में अमृतलाल वेगड़ जी शिक्षक रहे उसी कला निकेतन में छात्र होने पर मुझे गौरव प्राप्त हुआ।

नर्मदा-समग्र न्यास के संस्थापक अनिल माधव दवे जी की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने न्यास के प्रथम अध्यक्ष के रूप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कला और साहित्य के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त अमृतलाल वेगड़ जी का चयन किया। अनिल जी चाहते तो स्वयं अध्यक्ष पद पर आरूढ़ हो सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा न करते हुए वेगड़ जी को संस्था प्रमुख बना कर साबित किया कि बड़ा व्यक्ति हमेशा बड़ा होता है। वह पारखी और दूरदृष्टा तो थे ही, यही कारण था कि उन्होंने वेगड़ जी को अध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित किया। आज अमृत लाल जी और अनिल जी दोनों सूक्ष्म में समाहित हो चुके हैं, किन्तु नर्मदा परिक्रम के लिए अमृतलाल जी वेगड़ एवं नर्मदा के पर्यावरण के लिए अनिल माधव दवे जी के योगदान को सदियों तक याद किया जाएगा। उस अद्भुत जोड़ी ने नर्मदा के पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक संरक्षण के लिए जो किया है वह सैकड़ों सालों तक उपयोगी रहेगा।

अब बात अमृतलाल जी वेगड़ की।

> “ नदी को समग्रता से देखने और समझने की दृष्टि से उन्होंने समाज और नदी का सामाजिक अंकेक्षण साहित्यक रूप में किया जो अकल्पनीय है। नर्मदा के पानी को, पानी नहीं अमृत की संज्ञा देने वाले अमृत जी को नर्मदा जी ने भी इस अभिव्यक्ति के लिए आर्शीवाद स्वरूप साहित्य और प्रसिद्धि की शिखरता प्रदान की, जो सामान्यतः सभी को प्राप्त नहीं होती है। ”

हम इसे नर्मदा के सौंदर्य का जादू नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे कि वेगड़ जी जैसा निपट घरेलू व्यक्ति नर्मदा परिक्रमा (वेगड़ जी के शब्दों में परकम्मा) से इतना सम्मोहित हो गया कि वह नर्मदा परकम्मा की एक खंड-यात्रा पूर्ण होते ही अगली खंड यात्रा की योजना बनाने लगता। उनमें प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने की, तन्मय होने की प्रतिभा भी थी साथ ही साथ सटीक सजीव वर्णन का सामर्थ्य भी। उनमें भाषा के प्रति जितनी सहजता और निश्छलता थी उतनी ही श्रद्धा के साथ तटस्थ बौद्धिक विश्लेषण वति भी। उनके अन्तरमन में नर्मदा प्रवाहमान थी। जो नदी बाहर दिखाई देती है उससे विशाल व्यापक और जीवंत नदी उनके भीतर थी। ज्यों-ज्यों उनकी परकम्मा आगे बढ़ती, लोक जीवन के अनेक आख्यान वह उद्धटित करते जाते, यही उनकी शैली थी जो उन्हें उत्कृष्टता के शिखर तक ले जाती थी।

जैसे-जैस अमृतलाल जी वेगड़ अपनी परकम्मा पूरी करते जाते उनके प्रति श्रद्धावनत् लोगों की संख्या भी बढ़ती जाती। उनका जीवन दर्शन उनकी बातों में स्पष्ट झलकता था, वह कहते ''हवा इतनी गर्म हो गई है कि लगता है छोटी सी चिंगारी डाल दें तो हवा आग पकड़ लेगी'' वह उक्ति को सूक्ति बनाते भी देर नहीं करते थे ''प्रेम का दीप मुश्किल से जलता है, ईर्ष्या की आग आसानी से सुलगती है''। वह स्वभाव से ही विनोदी थे, पर विनोद को भी कभी-कभी हास्य और व्यंग्य की कसौटी पर कसना पड़ता है। जब गुमान को खेद होता है कि परकम्मावासी अपनी जमीन-जायदाद के तुच्छ झगड़े यहाँ समुद्र तक ले आते हैं, तब अमृत लाल चकित नहीं होते हैं, ''तुम समुद्र की कहते हो, आदमी जल्द ही अपने झगड़े अंतरिक्ष में ले जाएगा। झगड़ों के लिए धरती अब छोटी पड़ने लगी है।''

नर्मदा जी के कण-कण का वेगड़ जी की लेखनी और उनके सृजन से गहरा सामंजस्य रहा है। किसी नदी की गाथा को इतनी सुंदर उपमाओं से सजाने का काम वेगड़ जी ही कर सकते थे। किसी नदी की यात्रा का अनुभव कर ऐसा आख्यान हमेशा स्मृति पटल पर गूँजता रहता है। दरअसल वेगड़ जी ने नर्मदा-यात्रा को सहयात्री के रूप में सांस्कृतिक यात्रा बना दिया। उनकी सहगामिनी कांता बहन के बिना यह यात्रा अधूरी रह जाती, इस कारण उनका जिक्र न हो, ऐसा- कैसे हो सकता है। अमृत और कांता के इस अद्भुत सम्मिश्रण ने इसे ऐसे रंग दिए, मानवीय प्रसंगों का इतना अद्भुत चित्रण मानों आंखों के सामने ही सारा कुछ घटित हो रहा हो। ऐसा यात्रा वृतांत जिसने न सिर्फ वेगड़ जी को साहित्य के शिखर पर प्रतिष्ठित किया, बल्कि नदी की एक नई परिभाषा से परिचित कराया।

नदी को समग्रता से देखने और समझने की दृष्टि से उन्होंने समाज और नदी का सामाजिक अंकेक्षण साहित्यक रूप में किया जो अकल्पनीय है। नर्मदा के पानी को, पानी नहीं अमृत की संज्ञा देने वाले अमृत जी को नर्मदा जी ने भी इस अभिव्यक्ति के लिए आर्शीवाद स्वरूप साहित्य और प्रसिद्धि की

शिखरता प्रदान की, जो सामान्यतः सभी को प्राप्त नहीं होती है।

समाज के अनेकानेक विषयों को एक साथ स्पर्श करने की कला में माहिर वेगड़ जी व्यक्ति के रूप में हास्य, गंभीर, विचारशील, प्रयोगधर्मी ही नहीं थे, वरन् अंतर्राष्ट्रीय कलाकार का अद्भुत सम्मिश्रण थे। किसी एक व्यक्ति में इतने विषय समाहित रहना उसकी विलक्षणत का प्रमाण ही कहलायेगी।

विचार संप्रेषण की कला में सहजता के साथ इतनी निपुणता थी, कि हाड़-मांस का सबसे कमजोर व्यक्ति मंच पर वक्ता के रूप में न सिर्फ सब पर भारी पड़ता, वन सबको मंत्रमुग्ध कर देता। मंच पर वक्ता के रूप में वह बिना किसी भूमिका के सीधे विषय पर अपनी बात रखने में निष्णांत थे। इतनी पारंगता कम लोगों में ही देखने मिलती है। नर्मदा को बैरागी नदी की उपमा से नवाजने वाले वेगड़ जी स्वयं भी फक्कड़ी प्रवृत्ति के थे। किसी नदी का यात्रा-वृतांत के साथ जीवन-वृतांत एक साथ देने वाले कदाचित वह पहले नर्मदा यात्री कहलायेंगे। नर्मदा समग्र न्यास के संस्थापक सचिव अनिल माधव दवे के संयोजन में आयोजित लगभग सभी अंतर्राष्ट्रीय नदी महोत्सव में बतौर अध्यक्ष शिरकत करने वाले वेगड़ जी इतने सहज एवं सरल थे, मानों वह एक सामान्य कार्यकर्ता हों। उनकी सहजता-सरलता, उनके व्यक्तित्व को द्विगुणित करती थी। भारतीय इतिहास के ज्ञात और अज्ञात नदी-यात्रा वृतात में अमतलाल वेगड़ जी द्वारा रचित ''सौंदर्य की नदी नर्मदा, 'अमृतस्य नर्मदा'' एवं ''तीरे-तीरे नर्मदा'' न सिर्फ अद्भुत साहित्य का दर्शन कराते हैं, बल्कि नदी के महत्व को सांस्कृतिक विरासत के रूप में पुनः प्रतिष्ठित करते हैं। उनके इस अविस्मरणीय योगदान के लिए भारतीय नदी अनुरागी जनमानस उनका सदैव ऋण रहेगा।

नैसर्गिक सौंदर्य और सत्ता को शब्दों के रूप में संयोजित कर उसे रूचिकर बनाकर पाठकों के सामने परोसने की कला में इतने माहिर थे कि समझ ही नहीं आता कि प्रारंभ कहां है और अंत कहां। आमतौर पर नर्मदा की परिक्रमा आध्यात्मिक स्वरूप में होती है, किन्तु वेगड़ जी ने आगे बढ़ाते हुए इसे सामाजिक, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक यात्रा में परिवर्तन करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। मुझे तो लगता है वेगड़ जी ने जब नर्मदा परिक्रमा शुरू कर लेखनी उठाई होगी, उस वक्त तक उन्हें स्वयं आभास नहीं रहा होगा, कि जिस पवित्र-पावन नदी की परकम्मा कर वह लिख रहे हैं, उस लेखनी को मॉ नर्मदा की प्रभुता प्राप्त हो जाएगी।

पथ-प्रान्तर और वन-वनांतर की इतनी लंबी परकम्मा करने वाले अमृतलाल जी को सदैव खेद रहा कि नर्मदा के समग्र-रूप के दर्शन उन्होंने नहीं किए। न चातुर्मास किया, न परिक्रमा के सारे नियमों का पालन किया और न ही एक साथ परकम्मा पूरी की। तथापि उन्होंने जो कुछ देखा-सुना, जाना-बूझा, वह अतुलनीय रहा। उनकी पदयात्रा के साथ एक अंतर्यात्रा भी चलती रही है जो भले ही समाप्त न हुई हो पर अपने आप में पूरी है। नर्मदा के प्रति उनकी तृष्णा अनंत थी। तथापि अमृतलाल जी के अंतर्मन में किसी कोने में अतृप्ति बनी रही थी जो उसे वहां बने रहने का पूरा अधिकार रहा है। वेगड़ जी ने अपनी जीवन-यात्रा में जो अमृत बरसाया है वह सदियों में कम ही बरसता है।

वेगड़ जी आज हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उन्हीं के शब्दों में कहना होगा कि वेगड़ जी नर्मदा-सौंदर्य के सांस्कृतिक संवाददाता थे, हैं और अनादिकाल तक रहेंगे। उनकी स्मृतियां हम सभी की सांस्कृतिक धरोहर है, जिन्हें पीढ़ियां अपने मस्तिष्क पटल पर हमेशा संजोकर रखेंगी।□

लेखक - संस्थापक एवं अध्यक्ष जल संरक्षण मंच, वाइस प्रेसिडेंट हेल्पिंग हैंड्स फ़ॉर रिवर वेलफेयर सोसायटी, 2002 से जल संरक्षण कार्य जुड़े हैं।

भारत की 13 प्रमुख नदियों की डी.पी.आर. का निर्माण

भारत की 13 प्रमुख नदियों का वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से पुनरूद्धार हेतु डी.पी.आर. का निर्माण कार्य भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आई.सी.एफ.आर.ई.), देहरादून को सौंपा था। इस कार्य में झेलम, चिनाब, रवी, व्यास सतलुज, यमुना, ब्रह्मपुत्र, लूनी, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, कृष्णा और कावेरी नामक तेरह प्रमुख भारतीय नदियों को शामिल किया गया।

❑ डॉ. सुनीश बक्शी

राष्ट्रीय वनीकरण और पर्यावरण विकास बोर्ड, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार (एन.ए.ई.बी. एमओईएफ एंड सीसी, जीओएल) ने भारत की 13 प्रमुख नदियों का वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से पुनरूद्धार हेतु डी.पी.आर. का निर्माण कार्य भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आई.सी.एफ.आर.ई.), देहरादून को सौंपा था। इस कार्य में झेलम, चिनाब, रावी, व्यास सतलुज, यमुना, ब्रह्मपुत्र, लूनी, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, कृष्णा और कावेरी नामक तेरह प्रमुख भारतीय नदियों को शामिल किया गया। परियोजना की लागत रु. 12.75 करोड़ थी। आई.सी.एफ.आर.ई. के सभी नौ संस्थान डी.पी.आर. तैयार करने के कार्य में शामिल थे।

तेरह नदियों सामूहिक रूप से 18.90.110 किमी .2 के कुल बेसिन क्षेत्र को कवर करती हैं जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 57.45% है। इन तेरह नदियों तथा उनकी सम्मिलित 189 सहायक नदियों की कुल लंबाई 42.830 किमी. है।

इन नदियों और उनकी सहायक नदियों के रिवरस्केप में प्रस्तावित वानिकी हस्तक्षेपों को प्राकृतिक परिदृश्य, कृषि परिदृश्य और शहरी परिदृश्य नामक तीन परिदृश्यों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। डी.पी.आर. से लकड़ी की प्रजातियों, औषधीय पौधों, घास और झाड़ियों सहित वानिकी वृक्षारोपण के विभिन्न मॉडलों द्वारा विशेष तौर पर पर पानी की उपलब्धता में सुधार, भूजल पुनर्भरण में वृद्धि और मिट्टी के कटाव में कमी आने की अपेक्षा की जाती है। इन 13 डी.पी.आर. में विभिन्न परिदृश्यों में प्रस्तावित वानिकी कार्यों के लिए कुल 667 उपचार एवं वृक्षारोपण मॉडल और सहायक गतिविधियों को शामिल किया गया है। कुल मिलाकर, प्राकृतिक परिदृश्य के लिए 283 उपचार मॉडल, कृषि परिदृश्य में 97 उपचार मॉडल और शहरी परिदृश्य में 116 उपचार मॉडल प्रस्तावित किए गए हैं।

डी.पी.आर. के प्रस्ताव वन संरक्षण, वनरोपण, जलग्रहण क्षेत्र के उपचार, पारिस्थितिक बहाली, नमी संरक्षण, आजीविका सुधार, आय सृजन नदी के रिवरफ्रंट वइको-पार्कों के विकास और जनता के बीच जागरूकता तथा विनियमित पर्यटन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। प्रस्तावों में अनुसंधान और मूल्यांकन के घटकों को भी शामिल किया गया है। इन तेरह डी.पी.आर. का प्रस्तावित कुल बजट परिव्यय रु. 19,342.62 करोड़ है। 2019-2020 के दौरान विकसित अनुमानित लागत को थोक मूल्य सूचकांक से जोड़ा गया है और कार्यान्वयन के समय इसे समायोजित किया जाएगा। प्रस्तावित वानिकी कार्यों से तेरह नदियों के परिदृश्य में कुल वन क्षेत्र में 7,417.36 किमी.2 की वृद्धि होने की आशा है। प्रस्तावित उपायों से 10 वर्ष आयु के वृक्षारोपण में 50.21 मिलियन टन समकक्ष कार्बन डाइऑक्साइड और 20 साल आयु के वृक्षारोपण में 74.76 मिलियन टन समकक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को सोखने में मदद मिलेगी। तेरह नदियों के परिदृश्य में प्रस्तावित कार्यों से भूजल पुनर्भरण में 1,889.89 मिलियन घन मी. प्रति वर्ष की वृद्धि तथा जल के तलछट भार में 64,83,114 घन मी. प्रति वर्ष की कमी होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त गैर काष्ठ और अन्य वनोपज के द्वारा रु. 449.01 करोड़ उपार्जित होने की संभावना है। यह भी आशा है कि इन तेरह डी.पी.आर. में प्रावधान के अनुसार नियोजित गतिविधियों के माध्यम से 344 मिलियन मानव-दिवस का रोजगार सृजित होगा। तेरह प्रमुख नदियों की डी.पी.आर. में प्रस्तावित वानिकी गतिविधियों के समय पर और प्रभावी कार्यान्वयन से अविरल धारा, निर्मल धारा के अलावा स्वच्छ किनारा, बेहतर स्थलीय तथा जलीय जीव और आजीविका सुनिश्चित करने के साथ-साथ नदियों के पुनरूद्धार में महत्वपूर्ण योगदान की आशा है। ❑

लेखक - आई.एफ.एस. अधिकारी,
महानिरीक्षक, वन विभाग, केंद्रीय वन,
पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।

अगर आप नहीं तो कौन, अगर अभी नहीं तो कब ?

❑ भावना शर्मा

अनुभव से जाहिर होता है कि अधिकारियों के पास आदेशों और योजनाओं को गंभीरता तथा प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने के लिए जरूरी इच्छाशक्ति की कमी है। यही कारण है कि यमुना खासकर इस क्षेत्र (दिल्ली) में, घरेलू तथा औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट से भरे विशाल नाले में तब्दील होती जा रही है। राज्य का प्रशासनिक तंत्र और अधिकारी अपने संवैधानिक कर्तव्यों को अंजाम देने में नाकाम साबित हुए हैं। वहीं, खासकर जहां तक यमुना नदी का सवाल है तो भारतीयनागरिक पर्यावरण को बचाने के अपने मौलिक कर्तव्य को निभाने में असफल साबित हुए हैं। जहां एक ओर हम अपनी नदियों को पूजते हैं, वहीं दूसरी तरफ इनमें औद्योगिक अपशिष्ट बहाने से पहले एक बार भी नहीं सोचते। यमुना नदी वर्षों से हमारे मौलिक कर्तव्य की अनदेखी का शिकार है। अपने तटों पर हुए अतिक्रमण और इसकी तलहटी तथा बाढ़ मैदान में कचरा फेंके जाने जैसी विभिन्न नुकसानदेह गतिविधियों के जरिए प्रदूषित होने के बावजूद यमुना नदी वास्तव में बहुत 'खामोशी' से बह रही है।

यमुना नदी के बारे में राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा अपने आदेश में की गई टिप्पणी

यमुना नदी भारत की न केवल एक पवित्र नदी है बल्कि लाखों लोगों की जीवन रेखा भी है,जो अपनी आजीविका के लिए इस पर निर्भर हैं। उत्तराखंड के धार्मिक स्थल यमुनोत्री से निकलने वाली यमुना नदी, मथुरा, आगरा और दिल्ली जैसे बड़े शहरों से होकर प्रवाहित होती है। प्रयागराज में यमुना नदी गंगा के साथ जा मिलती है और यह संगम हिंदुओं के लिए बहुत पवित्र स्थल है।

यमुना नदी गंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है और यमुना की कुछ सहायक नदियां जैसे कि चंबल, केन, बेतवा और सिंध नदियां भी बहुत बड़ी हैं। यमुना नदी बेसिन गांगीय डॉल्फिन, ऊदबिलाव, कछुए तथा अनेक जलीय जीवों का महत्वपूर्ण निवास है।

यमुना नदी इस समय संकट से गुजर रही है क्योंकि यह जिन बड़े शहरों से होकर गुजरती है वहां इसका बहुत बेरहमी से दोहन किया जा रहा है। कभी भूगर्भीय जल को रीचार्ज करने और बाढ़ के पानी को यमुना तक पहुंचाने का काम करने वाली कुदरती नालियों पर या तो अतिक्रमण हो गया है या फिर उन्हें गंदी नालियों में तब्दील कर दिया गया है। नदी पर ऐसे अनेक बांध बना दिए गए हैं जिनसे उसके प्राकृतिक प्रवाह को नहरों की तरफ मोड़ा गया है। इन नहरों का इस्तेमाल सिंचाई तथा नदी के किनारे बसे शहरों में जलापूर्ति के लिए किया जाता है।

दिल्ली में यमुना नदी का प्रवाह क्षेत्र इसकी कुल लंबाई का सिर्फ 3% है लेकिन इस नदी में होने वाले प्रदूषण का 70% हिस्सा इसी शहर से गिरता है। व्यावहारिक रूप से देखें तो दिल्ली में इस नदी का कोई भी कुदरती प्रवाह बचा नहीं रह गया है क्योंकि इसका ज्यादातर पानी हथिनी कुंड बांध की तरफ मोड़ दिया गया है जो कि दिल्ली में यमुना के प्रवेश पर बनाया गया है। दिल्ली में यमुना का बाकी पानी वजीराबाद, आईटीओ और ओखला बैराज के जरिए मोड़ दिया गया है। दिल्ली में यमुना नदी में सिर्फ अनिस्तारित घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट ही बहता है। खेतों मे प्रयोग किए हुए रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों की वजह से भी यमुना नदी में प्रदूषण बढ़ रहा है। यमुना की इस दुर्दशा के अनेक कारणों में शहरीकरण और कंक्रीट से इमारतें बनाए जाने, कुदरती नालियों की चौड़ाई कम होने तथा अनेक अन्य कारणों से भूगर्भीय जल का

यमुना नदी भारत की न केवल एक पवित्र नदी है बल्कि लाखों लोगों की जीवन रेखा भी है,जो अपनी आजीविका के लिए इस पर निर्भर हैं। यमुना नदी गंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है और यमुना की कुछ सहायक नदियां जैसे कि चंबल, केन, बेतवा और सिंध नदियां भी बहुत बड़ी हैं। यमुना नदी बेसिन गांगीय डॉल्फिन, ऊदबिलाव, कछुए तथा अनेक जलीय जीवों का महत्वपूर्ण निवास है।

रीचार्ज बहुत कम होना भी शामिल है। हम यमुना के बाढ़ मैदानों पर अवैध अतिक्रमण और नदी में इमारतों का मलबा तथा अन्य ठोस अपशिष्ट डाले जाने की घटनाओं को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते।

दिल्ली में यमुना के विघटित ऑक्सीजन की मात्रा बहुत कम रह गई है और गर्मियों के मौसम में तो यह शून्य तक गिर जाती है। इसका मतलब यह है कि इस नदी में जलीय जीवों का जीवन बहुत मुश्किल है। यह आश्चर्यजनक है कि लोगों को यमुना में अब भी मछलियां मिल रही हैं। विषैली धातुएं जैसे कि निकल, सीसा, मैग्नीज, क्रोमियम और जिंक दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में यमुना नदी में पाए जाते हैं। इनमें अत्यधिक कैंसरकारी हेक्सावेलेंट क्रोमियम भी शामिल है। जब ऐसे जहरीले पानी में भी मछलियां जिंदा रह पा रही हैं तो इसका मतलब यह है कि उनके अंदर इन रसायनों का संकेंद्रण 20 गुना ज्यादा हो सकता है। यह बायोमैग्नीफिकेशन नामक प्रक्रिया से हो सकता है। ऐसे में इन मछलियों को खाने से नदी के किनारे रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

यमुना नदी की हालत 1980 के दशक से तीव्र नगरीकरण और बिना सोचे समझे किये गये विकास की शुरुआत के साथ ही खराब होनी शुरू हो गई थी। भारत सरकार ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा एक अध्ययन प्रकाशित किए जाने के बाद वर्ष 1993 में इसका संज्ञान लिया। उसके बाद जापान बैंक इंटरनेशनल कॉरपोरेशन (जे.आई.सी.ए.) की मदद से दिल्ली में यमुना एक्शन प्लान (1993-2003) की शुरुआत की गई। इनमें हरियाणा के छह और उत्तर प्रदेश के आठ नगरों को भी शामिल किया गया।

यमुना एक्शन प्लान का पहला चरण संपन्न होने के बाद वर्ष 2003 में जापान बैंक इंटरनेशनल कोऑपरेशन की ही मदद से

दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में इस योजना का दूसरा चरण शुरू किया गया। गंगा एक्शन प्लान के पहले और दूसरे चरण के तहत 21 नगरों में कुल 42 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए गए और दिल्ली, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश में कुल 942.25 मिलियन लीटर प्रतिदिन सीवेज ट्रीटमेंट क्षमता की नई वृद्धि की गई। यमुना एक्शन प्लान के प्रथम और द्वितीय चरण से मिले सबक के बाद जेआईसीए के सहयोग से वर्ष 2011 में इसका तीसरा चरण शुरू किया गया। पूर्व के प्रयासों से यह सबक मिला कि बड़े शहरों में सीवेज संबंधी मूलभूत अवसंरचना का निर्माण बहुत जरूरी है लेकिन इससे चुनौती का पूर्ण समाधान नहीं हो सकता। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा सरकार केवल उत्प्रेरक का काम कर सकती है लेकिन प्रधानमंत्री 'अविरल धारा', 'निर्मल धारा' और 'स्वच्छ किनारा' का स्वप्न और विजन साकार करने के लिए नदी की सफाई को एक सच्चा जनांदोलन बनाना होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'जनशक्ति-जलशक्ति' पर भी जोर दिया है जिसके माध्यम से जल संरक्षण अभियान में लोगों की सहभागिता की शक्ति को मान्यता दी गई है।

इसे आगे बढ़ाते हुए अनेक संगठन नदियों के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के लिए आगे आए हैं। ट्री क्रेज फाउंडेशन (टीसीएफ) एक गैर सरकारी संगठन(सेक्शन 8 कंपनी) है। इसका मिशन समुदायों को अपने पर्यावरण की देखभाल के लिए प्रोत्साहित करना है। टीसीएफ ने 21 जुलाई 2019 को 'मेरी यमुना, मेरे घाट' कार्यक्रम की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक जन आंदोलन खड़ा करना है। इसके पीछे यह उम्मीद है कि एक दिन ऐसा आएगा जब सभी हित धारक लोग नदियों की बहाली और घाटों के पुनरुद्धार के लिए निस्वार्थ भाव से साथ मिलकर काम करेंगे।

यह फाउंडेशन 21 जुलाई 2019 से दिल्ली में यमुना के घाटों पर साफ-सफाई के अभियान नियमित रूप से संचालित कर रहा है। इसमें समाज के सभी वर्गों के लोगों को शामिल किया जाता है। 'मेरी यमुना, मेरे घाट' मुहिम का उद्देश्य लोगों को नदी के संरक्षण संबंधी उनके मौलिक कर्तव्य के प्रति जागरूक करने और नदियों तथा घाटों की स्थिति के लिए सामूहिक जिम्मेदारी लेने के प्रति जागरूक करना है। इस कार्यक्रम में एक ऐसे भविष्य के लिए समन्वय, साझेदारी और साथ मिलजुल कर काम करने की समय की आवश्यकता पर जोर दिया गया है ताकि एक ऐसा भविष्य बनाया जा सके जहां नदियां 'अविरल' और 'निर्मल' होकर प्रवाहित हों। □

लेखक - पर्यावरणविद,
जीआईएस/रिमोट सेंसिंग विशेषज्ञ,
सीईओए, ट्री क्रेज फाउंडेशन।

नर्मदा की सहायक नदियां

वेदा, कुन्दा और बोराड़ - (नर्मदा की सहेलियां)

1. नाम : वेदा, **उद्गम :** खरगोन जिले में सतपुड़ा की पहाड़ी से, **लम्बाई :** 169 किलोमीटर, **संगम :** नर्मदा में **किनारे के नगर :** चेनपुरा, बमनाला, गोगावां, प्रवाहित क्षेत्र : झिरन्या , भीकनगांव तथा खरगोन, **बांध :** अपरवेदा सिंचाई परियोजना हिरन्या तहसील के ग्राम नेमित में।

2. नाम : बोराड़, **उद्गम :** खरगोन तहसील के केवती फाटा से । **संगम :** नर्मदा में, **प्रवाहित क्षेत्र :** खरगोन, कसरावद, बड़वानी।

3. नाम : कुंदा, उद्गम : खरगोन जिले में सतपुड़ा की पहाड़ी से सिरवेल में, **संगम :** नर्मदा में, **किनारे के नगर :** खरगोन, **बांध :** जला देवड़ा बांध (रिया तहसील के ग्राम नेमित में) **सहायक नदी :** खराक

किसी भी क्षेत्र या प्रदेश की प्रवाह प्रणाली वहां के उद्वारा नियंत्रित होती है। नदी जिस क्षेत्र में है उसे नदी का अपवाह तंत्र कहते हैं। इसके अन्तत किसी क्षेत्र की नदियां उनकी सहायक नदियों के बहने की दिशा तथा क्रमका अध्ययन किया जाता है। अपवाह तंत्र में मुख्य नदी के साथ उसकी सहायक नदियों को भी सम्मिलित किया जाता है। जो एक प्रवाह प्रणाली का निर्माण करती हुई मानव साव के लिए नदियों का अधिकाधिक महत्व है। पूर्ण निमाह क्षेत्र का अधिकतर ग्रामीण बसाव नदियों के अथातों के आस-पास है।

जिले का अधिकांश भाग नर्मदा नदी तंत्र द्वारा अपवाहित है। ताप्ती अपवाह तंत्र जिले के दक्षिणी सीमा के किनारे किनारे सीमित क्षेत्र में फैला हुआ है। इन दो नदी तंत्रों के बीच के भाग में से सतपुड़ा की जल विभाजक रेखा गयी है, जो दक्षिण पूर्व में बदलाव मण्डला प्रामों से प्रारंभ होकर दक्षिण पश्चिम में बहा दरों को जाती है।

जिले में ताप्ती नदी तंत्र की अपवाह रेखाएं बरसाती नालों तथा छोटी नदियों से निर्मित हैं। उनके बहाव की सामान्य दिशा दक्षिण पश्चिम है। वनतर नाला, दक्षिण सीमा रेखा का निर्माण करता हुआ पश्चिम की ओर बहता है जिसमें अनेक छोटी नदियों का जल मिलता है। खरगोन जिले में नर्मदा नदी तंत्र की दो प्रमुख अपवाह रेखाएं पायी जाती हैं। इसमें पहली अंश क्षेत्र रेखा है, जिसमें ट्रक लाइन शामिल है। स्वयं नर्मदा नदी जो विन्ध्याचल तथा सतपुड़ा के कठोर शैल पूंज के बहुत नीचे की ओर से वहती है। इसमें कई सहायक नदियां मिलती हैं। ये नदियां सिल्ट युक्त घाटी में बहती हुई समकोण रूप में नर्मदा में जा मिलती है। अपवाह का दूसरा प्रकार सतपुड़ा को पुरानी चट्टानों से विकसित हुआ है। इस क्षेत्र से जा सहायक नदियां नर्मदा में मिलती हैं एक जाल द्वारा समान रूप से प्रवाहित होती हुई इस अपवाह तंत्र शाखाओं वाले वृक्ष के समान दिखाई। देती हैं। खरगोन जिले में नर्मदा नदी के अतिरिक्त कुंदा, वेदा कारम, योरल वोराड़ आदि नदियां हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है -

वेदा नदी

नाम – वेदा नदी
उद्गम – खरगोन जिले में सतपुड़ा की पहाड़ी से
लम्बाई – 169 किलोमीटर
संगम – नर्मदा में
नदी के किनारे नगर – चेनपुरा, यमनाला, गोगावां
प्रवाहित क्षेत्र – झिरन्या, भीकनगांव तथा खरगोन
नदी पर बांध– अपरबंदा सिंचाई परियोजना, हिरन्या तस्सील के ग्राम नमित में।

यह जिले की प्रमुख नदियों में से एक है जो सतपुड़ा को पहाड़ी से निकलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई सोनखड़ी (कसराबद) एवं (रतनपुर गांव) (भीकनगांव) के निकट कुन्दा नदी में शामिल हो जाती है तथा जो आगे जाकर नर्मदा नदी में सम्मिलित हो जाती है। इसका जलग्रहण क्षेत्र 3825 वर्ग कि.मी. है इस नदी की लम्बाई 169 कि.मी. है। नदी झिरन्या, भीकनगांव खरगोन तहसील का जल अपवाहित करती है। चेनपुरा, इमनाला गोगावा इस नदी के किनारे बसे प्रमुख ग्राम है।

किसी भी क्षेत्र या प्रदेश की प्रवाह प्रणाली वहां के उ'चाद्वारा नियंत्रित होती है। नदी जिस क्षेत्र में होकर बहती है उसे नदी का अपवाह तंत्र कहते हैं। इसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र की नदियां उनकी सहायक नदियों के बाहने की दिशा तथा ₹ म का अध्ययन किया जाता है। अपवाह तंत्र में मुख्य नदी के साथ उसकी सहायक नदियों को भी सम्मिलित किया जाता है। जो एक प्रवाह प्रणाली का निर्माण करती हुई बहती है।

इस नदी पर बहुप्रतीक्षित मध्यम अपरवेदा सिंचाई परियोजना सन 1972 से प्रस्तावित थी, निर्माण कार्य प्रारंभ भी हुआ परंतु कई वर्षो तक अवरुद्ध पड़ा रहा। यह खरगोन जिले की आदिवासी बाहुल्य झिरन्या तहसील के ग्राम नेमित में निर्माणाधीन है। नागरिकों की मांग एवं मीडिया की पहल इसका निर्माण कार्य पुनः प्रारंभ कर सन् 2009 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है।

बोराड नदी

नाम – वोराड़ नदी

उद्गम – खरगोन तहसील के केवती फाटा से

संगम – नर्मदा में

प्रवाहित क्षेत्र – खरगोन, कसरावद, बड़वानी।

इस परियोजना से जिले के भीकनगांव, खरगोन, भगवानपुरा तथा पुलकोट क्षेत्र के 39 गांवों में 102 मि.मी. लंबाई की नहरों का जाल फैलेगा। इसमें मुख्य बाध की बाई तट पर नहर 30437 कि.मी. एवं 6शाखा नहरें 22 कि.मी. और 37 उप लहरे 80 कि.मी. लम्बाई की निर्मित होंगी। इन नहरों से उक्त क्षेत्रों की 9917 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित होगी तथा 7184 परिवारों के 17520 किसान लाभान्वित हो सकेंगे।

कुंदा नदी

नाम – कुंदा नहीं

उद्गम – खरगोन जिले में सतपुड़ा की पहाड़ी से सिरवेल में,

संगम – नर्मदा में

नदी के किनारे नगर – खरगोन

नदी पर बांध – देला देवड़ा बांध (हिरा तहसील के ग्राम नेमित में

सहायक नदी – खराक

बोराड़ नदी खरगोन तहसील के केवती फाटा नामक स्थान से निकलती है। यह उत्तर की ओर बहती हुई नर्मदा नदी में मिल जाती है। यह नदी खरगोन तहसील एवं कसरावद तहसील का जल अपवाहित करती हुई खरगोन तथा बड़वानी जिले की सीमा रेखा के समानान्तर बहते हुए नर्मदा नदी में समाहित हो जाती है।

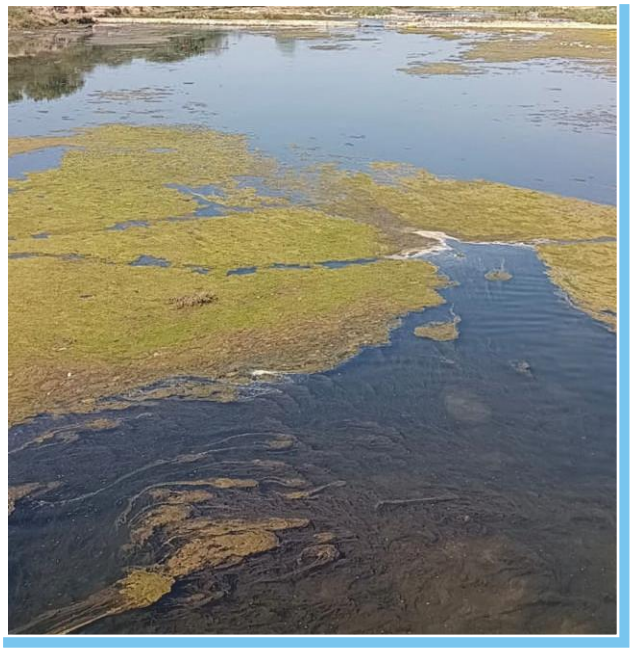

कुंदा नदी भी पैदा के समान सतपुड़ा के सिरवेल महादेव नामक पहाड़ी से निकलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होते हुए सिप्टान के निकट पैदा नदी में मिल जाती है। कुंदा के तट पर अनेक मंदिर, सिरवेल महादेव मंदिर, नत्रेश्वर मंदिर (भगवानपुरा (तहसील) संतोषी माता मंदिर एवं भारत प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। जिले का मुख्यालय खरगोन भी इसके किनारे बसा हुआ है। कुंदा नदी पर देजला देवाड़ा नामक बांध बनाया गया है जो लगभग 3 कि.मी. लम्बा है तथा क्षेत्र का सबसे बड़ा बांध है।

इस बांध द्वारा भगवानपुरा के ग्रामीण इलाकों को सिंचाई हेतु जल प्रदान किया जाता है। खरगोन नगर की पेयजल आपूर्ति भी इसी बांध द्वारा होती है। खरगोन शहर से 4 कि.मी. दूर संतोषी माता मंदिर के समीप कंदा नदी पर छोटा बांध बनाकर फिल्टर मशीन द्वारा पानी को साफ कर सम्पूर्ण शहर में जल प्रदान किया जाता है। खराक नदी कुंदा नदी की सहायक नदी है। इन प्रमुख नदियों के अतिरिक्त जिले में चौरल, गौतमी, मालन, चन्द्रकेशर, अपर महेश्वरी आदि नदिया भी बहती हुई नर्मदा में मिल जाती है। इन सभी नदियों में वर्ष भर जल नहीं रहता है केवल नर्मदा ही एक मात्र नदी है जिसमें वर्ष भर जल पर्याप्त उपलब्ध रहता है। उन्लेखित बांधों ओंकारेश्वर पुनासा तथा मण्डलेश्वर के कारण जल की मात्रा में गिरावट देखी गई है।

जिले के अपवाह तंत्र का अध्ययन करने पर हम कह सकते हैं कि जिले की अधिकांश नदियां छोटी हैं, जिनमें ग्रीष्म ऋतु में जल की मात्रा बहुत कम हो जाती है। नर्मदा नदी के अतिरिक्त शेष नदियां ग्रीष्मकाल में प्रायः सूख जाती है तथा वर्षाकाल में प्रवाहित होने लगती है। इन नदियों का अपवाह क्षेत्र ऊबड़-खाबड़ कंकरीला व पथरीला होने से यहां की चट्टानें कठोर है जिस पर गिरने वाला वर्षा जल शीघ्र ही नदियों द्वारा वहा दिया जाता है और भूमि जल सोख नहीं पाती है। यही कारण है कि वर्षा ऋतु में इन नदियों में तत्काल बाढ़ आ जाती है। □

"नदी का घर" से आयोजित आनलाईन प्रशिक्षण कार्यशाला की झलकियाँ

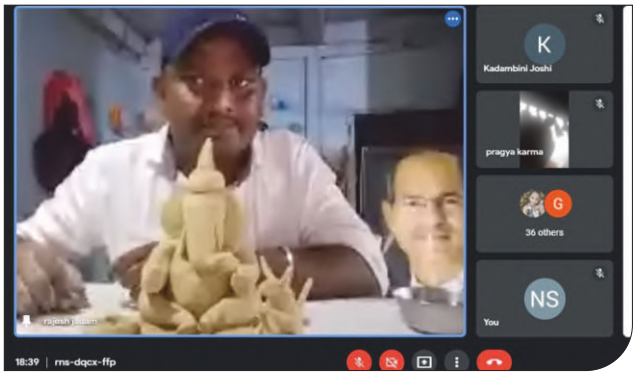

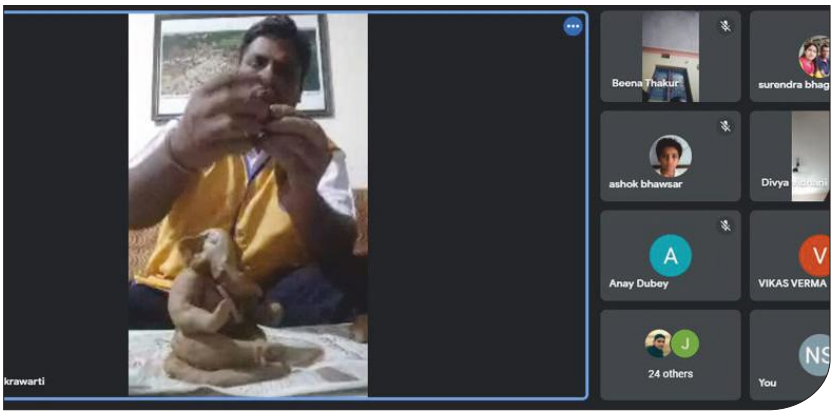

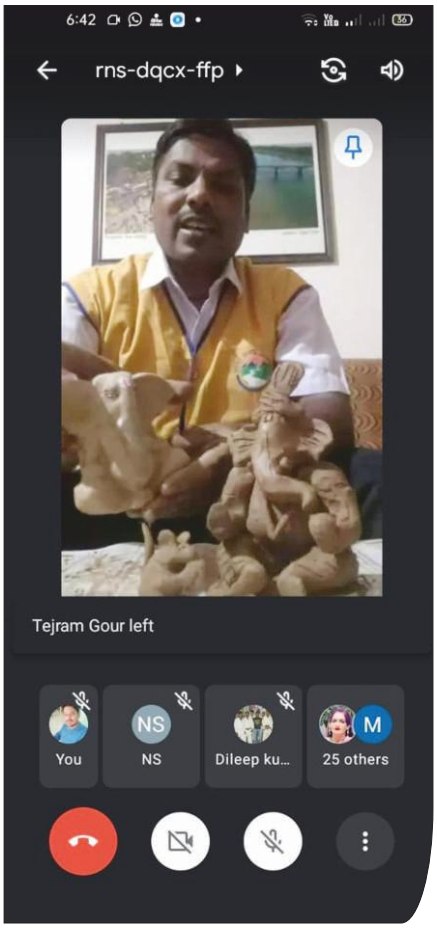

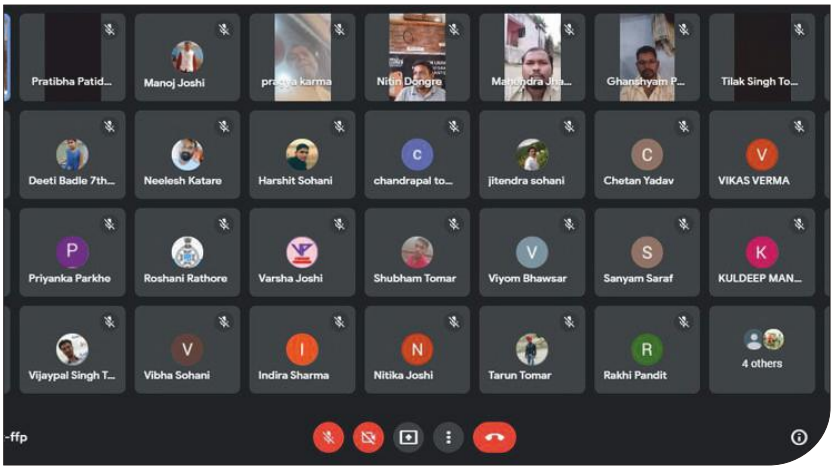

आओं बनाए अपने हाथों अपने श्री गणेश

क्षेत्रिय स्थानों पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशालाओं की झलकियाँ

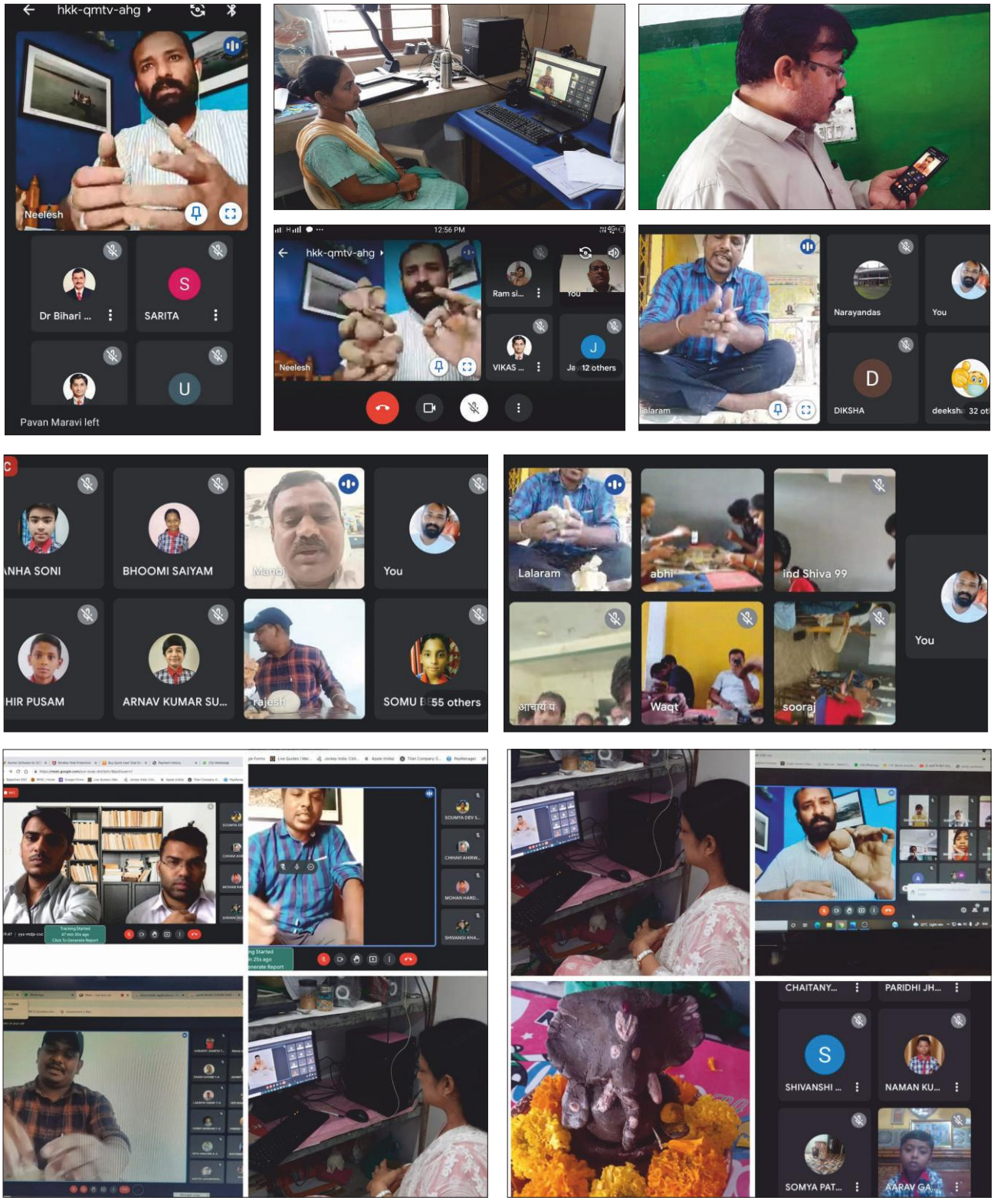

आओं बनाए अपने हाथों अपने श्री गणेश

आओं बनाए अपने हाथों अपने श्री गणेश

चौपाल संस्कृतिक खेल एवं समाज कल्याण समिति द्वारा एवं नर्मदा समग्र के सहयोग से भोपाल स्थित रुचि लाईफ़ कॉलोनी और फॉर्च्यून डिवाइन सिटी फ़ेज 2 में मिटटी के गणेशी जी बनाने की कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे महिलाओं और बच्चों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

आओं बनाए अपने हाथों अपने श्री गणेश

जबलपुर सांसद, श्री राकेश सिंह

जबलपुर संभाग आई.जी. पुलिस, श्री भगवत सिंह चौहान

जबलपुर कमिश्नर, श्री बी. चंदशेखर

नदी अनुरागी व नर्मदा समग्र से जुड़े डॉ. जितेन्द्र जामदार और विनोद शर्मा द्वारा जबलपुर में विभिन्न विभूतियों को शुद्ध मिट्टी की गणेश प्रतिमा भेंट की गई।

'नदी का घर' में गणेश उत्सव की झलकियाँ

स्थापना

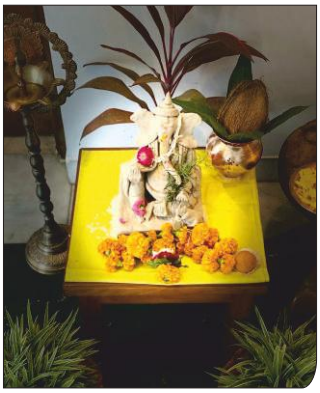

विसर्जन

रक्षाबंधन - वृक्षाबंधन

देवगांव संगम - महाकौशल

छोटा बड़दा - मालवा - निमाड़

नर्मदापुरम

प्रकृति वंदन - हरियाली चुनरी

नर्मदा समग्र घाट इकाई देवगांव संगम द्वारा हरियाली चुनरी एवं प्रकृति वंदन कार्यक्रम, 29 अगस्त 2021 को किया गया। जिसमें 351 पौधों की हरियाली चूनरी बुनी गई और उनका का पूजन किया गया। कार्यक्रम के पूर्व देवगांव टीम ने देवगांव के 250 परिवारों और मंडला नगर के 101 परिवारों को हल्दी-चावल व आमंत्रण पत्रक देकर सहभागिता हेतु आग्रह किया। नर्मदा समग्र देवगांव संगम की घाट ईकाई द्वारा इस चूनरी की देख-रेख एंव सुरक्षा का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में श्री श्याम श्रीवास जी, श्री अशोक कुकरेजा जी, श्री आकाश दीक्षित जी, श्री लालाराम चक्रवर्ती जी, श्री राकेश शुक्ला जी, श्री कल्लू झारिया जी, श्री कृष्णा झारिया, श्री कोमल झारिया, श्री योगेंद्र झारिया जी, श्री राजकुमार झारिया जी के अलावा जिला पंचायत उपाध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य, जनपद अध्यक्ष, जनपद उपाध्यक्ष, जनपद सदस्य, देवगांव सरपंच जबलपुर से श्री सी.के. पटवा जी व अन्य सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस (29 जुलाई 2021) पर रिसर्च फाउंडेशन ऑफ इंडिया, एसओसी-आईपीएस अकादमी, जेएचईआरएफ द्वारा अन्य संगठनों के सहयोग से वेबिनार का आयोजन किया गया, इसमें नर्मदा समग्र न्यास के मुख्य कार्यकारी श्री कार्तिक सप्रे ने भाग लिया और नर्मदा समग्र द्वारा प्रकृति संरक्षण के लिए किये जा रहे कार्यों के बारे में चर्चा की।

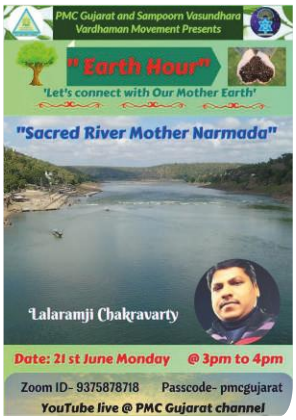

PMC गुजरात और संपूर्ण वसुंधरा वर्धमान मूवमेंट द्वारा आयोजित वेबिनार शृंखला में नर्मदा समग्र के समन्वयक श्री लालाराम चक्रवर्ती ने मुख्य वक्ता के रूप में नर्मदा समग्र द्वारा नदी संरक्षण पर किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया और नर्मदा जी से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया।

ब्रह्माकुमारी यूथ विंग मण्डला द्वारा 'प्रकृति एवं योग' विषय पर 30 जून 2021 को आयोजित वेबिनार में नर्मदा समग्र के महाकौशल भाग समन्वयक श्री नीलेश कटारे जी ने नर्मदा जी के जलग्रहण क्षेत्र में नर्मदा समग्र द्वारा किये जा रहे कार्यों व गतिविधियों के संबंध में विषय रखा और नर्मदा जी तटों पर प्रवास के अपने अनुभवों को साझा किया। नीलेश जी अपने वक्तव्य में विशेषकर नदी एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में स्व. अनिल माधव दवे जी द्वारा किये गए कार्यों, उनके विचारों और उससे मिलने वाली प्रेरणा का भी उल्लेख किया।

नर्मदा समग्र संचालित नदी एंबुलेंस कार्यक्षेत्र (सरदार सरोवर डूब क्षेत्र) के गांव जलसिंधी, नानकापूरा, बड़ा अंबा, डुबखेड़ा, शकरजा, सिरखेड़ी, बेरखेड़ी, सुगट, झंडाना में सेवा भारती बड़वानी द्वारा उपलब्ध कराये गए भोजन किट का 200 परिवारों में वितरण किया गया। दूसरी कड़ी में ग्राम कोटबंधनी, करी, धजारा, तोड़खेड़ा, घोंघसा में रहने वाले 279 परिवारों को भोजन किट प्रदान की।

रेवा सेवा केंद्र ककराना में 24 अगस्त 2021 को शिवपंथियों की ककराना मंडली को वाद्य यंत्र, सद्गुरू सेवा संघ न्यास के सहयोग से भेंट किए गए। शिवपंथ, वनवासी परम्पराओं, मान्यताओं एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए ब्रह्मलीन महाराज पारसिंह बापू विचारों, प्रयासों और मार्गदर्शन में, ग्राम नकटी माता, तहसील पाटी, ज़िला बड़वानी से आरम्भ हुआ। उनके अनुयायियों द्वारा इसका प्रसार किया गया और वर्तमान में अलिराजपुर, धार एवं आस-पास के क्षेत्रों में कई स्थानीय वनवासियों द्वारा मंडली बना कर इसका अनुसरण किया जा रहा है। इसमें स्थानीय लोग सामाजिक सुधार एवं नशा मुक्ति पर कार्य करते हैं। साथ ही शिव जी और स्थानीय देवों की आराधना करना, भजन-कीर्तन, घरों में शुभ अवसरों पर गायन, इत्यादि गतिविधियाँ करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण और भारतीय समाधान

❑ सुरभि तोमर

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण एक दूसरे से प्राचीन काल से मिले हुए हैं। पिछले 50 से 7 सालों के अंदर पर्यावरण के ऊपर एक आंच आई है। धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है और इस तापमान के बढ़ने की वजह से हमें बहुत सारा सुखा और कहीं कहीं पर आकस्मिक बाढ़ दिखाई दे रही है। समुद्र का स्टर बढ़ रहा है। अगले 50 साल के अंदर, गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों में बाढ़ का प्रकोप बढ़ेगा और उसके बाद जब हमारे ग्लेशियस पूरे पिघल जाएंगे तब पूरे उत्तर भारत क्षेत्र में जल संकट पैदा होगा।

यह क्यों हो रहा है और इसको रोकने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

पूरी धरती में जलवायु परिवर्तन या तापमान बढ़ने की दो मुख्य कारण है- एक कि हम अपनी प्राचीन जीवन शैली और कृषि पद्धति को छोड़ चुके हैं और दूसरा आधुनिक टेक्नोलॉजी और तकनीकी एडवांसमेंट्स के यह साइड इफेक्ट्स है।

हम पहले शुरुआत करेंगे जलवायु परिवर्तन से।

जलवायु परिवर्तन क्यों हो रहा है?

हम आधुनिकता के साथ और आधुनिकता की वजह से प्रति वर्ष 51 बिलियन टर्न ग्रीनहाउस गैसेस अपने हवा में छोड़ते हैं। ग्रीनहाउस गैसेस क्या होती है? आप सोचिए कि कभी आप एक बस या कार के अंदर खिड़कियां बंद करके अगर बैठते हैं तो कार गर्म होने लगती है या बस गर्म होने लगती है जबकि बाहर का तापमान ठंडा होता है। ग्रीन हाउस गैसेस भी ऐसा ही काम करती है। सूरज की जो गर्मी आती है उसको हमारी धरती पर कैद कर लेती है जिससे धरती का तापमान बढ़ने लगता है। यह बहुत ही खतरनाक और चिंताजनक बात है। इससे ना सिर्फ हमारे ग्लेशियर पिघल जाएंगे, हमारी नदियां जैसे ब्रह्मपुत्र गंगा यमुना जो हिमालय से निकलती है, वह पहले तो उनमें बहुत ज्यादा बाढ़ आएगी और फिर उसके बाद पूरी सूख जाएंगे। 60 साल के बाद हम सिर्फ एक अकाल या सूखे की भूमिका को देखेंगे पूरे उत्तर भारत में।

धरती के तापमान के बढ़ने से सिर्फ पर्यावरण पर ही असर नहीं पड़ेगा। पर्यावरण का असर राजनीतिक और भौगोलिक क्षेत्रों पर पड़ेगा। उदाहरण है बांग्लादेश। वहां का 30 से 40 प्रतिशत एरिया ऑलरेडी पानी मी डूब रहा है। अब बांग्लादेश जो विश्व का सबसे घनी आबादी वाला क्षेत्र है उसकी आबादी कहां जाएगी? वह माइग्रेट करेंगे। माइग्रेट करके वह वैद्य अवैध तरीके से भारत जैसे देशों के अंदर भारत के ऐसे जगह पर जाकर रहेगी जहां पर लोगों को कठिनाई पहुंचेगी। यह समस्या डायरेक्टली धरती के तापमान के बढ़ने से होएगी।

अभी यह ग्रीनहाउस गैसेस आती कहां से है?

हम एक-एक करके सारी ग्रीनहाउस गैसेस के सोर्सेस और उनको हम भारतीय दृष्टिकोण से किस प्रयोग से बदल सकते हैं उसके बारे में देखेंगे।

27% ग्रीनहाउस गैसेस इलेक्ट्रिसिटी और इलेक्ट्रिसिटी के उपभोग की वजह से बनती है। सच्चाई यह है की हाइड्रोइलेक्ट्रिक डैम, न्यूक्लियर पावर प्लांट, सोलर और विंड के बावजूद भी विश्व की ज्यादातर इलेक्ट्रिसिटी कोयले से बनती है। गर्व की बात यह है कि भारत पिछले पांच-छह सालों में सोलर और विंड एनर्जी में अपनी उत्पादन को बहुत ज्यादा बढ़ाता जा रहा है।

हम क्या कर सकते हैं पर्सनल लेवल पर? स्वयं से शुरू करके हम क्या कर सकते हैं?

अगर हम अपने से पूछे कि हम क्या कर सकते हैं तो हम अपने घरों में सोलर इलेक्ट्रिसिटी, सोलर हीटर को लगा सकते हैं। आजकल बाजार में छोटे-छोटे सोलर लैंप मिलते हैं। अगर हम प्रोफेशनल लेवल पर सोचें तो, जब हम अपने घर बनाते हैं तो अपनी भारतीय संस्कृति से मिले हुए ट्रेडिशनल मेथड को अगर हम उपयोग में लाएं तो हमारे घर में हमको ना एसी की जरूरत पड़ेगी और ना ही हीटर की। घरों की दिशा ऐसी हो कि सूरज की रोशनी पहले ही घर के अंदर पड़े और उसे गर्म करे।गर्मी के मौसम में घर को ठंडा रखने के लिए घरों की छतें ऐसी हो की घर की गरमाई को ऊपर तक ले जाए। आर्किटेक्चर के स्टूडेंट्स और आर्किटेक्चर के प्रोफेशनल्स इसमें अपना काफी योगदान कर सकते हैं। अपने भारतीय ट्रेडीशनल आर्किटेक्चर का अध्ययन करके और उसे आधुनिक तकनीकीयों के साथ मिलाकर नई तकनीकियां बनाकर। और आखिर में हम हर घर घर में पर्यावरण को बचाने के लिए कोयले से बनी इलेक्ट्रिसिटी का प्रयोग कम करना चाहते हैं। सबसे छोटा काम हम यह कर सकते हैं कि कम से कम बिजली इस्तेमाल करें। कमरे से निकलते हुए लाइट और पंखे को बंद कर दें। एसी का कम से कम प्रयोग करें।

यह ग्रीन हाउस गैसेस आती कहां से हैं? इनके स्रोत क्या है?

वार्षिक 51 बिलियन टन ग्रीनहाउस गैसेस में से एक तिहाई गैसेस, हम जो सामान बनाते हैं उससे आती है। जैसे कि सीमेंट, स्टील या प्लास्टिक। इनको बनाने के लिए बहुत ही ज्यादा हमको कार्बन और गर्मी की जरूरत पड़ती है। और वह आता है फॉसिल फ्यूल जैसे पेट्रोलियम या कोयला जलाकर।

भारत की सीमेंट फैक्ट्री में हम प्लास्टिक के कचरे को भी जलाते हैं जिसके लिए पंचायत, नगर पालिका या एनजीओस सीमेंट फैक्ट्री को भुगतान देती हैं प्लास्टिक कचरे को खरीदने के लिए। यह उत्पादन बढ़ता ही जाएगा उदाहरण के तौर पर देखें तो सिर्फ 10 साल में चाइना ने जितना कंक्रीट इस्तेमाल किया है उतना पूरे अमेरिका के देश ने पूरी बीसवीं सदी में इस्तेमाल किया था।

हम पर्सनल स्तर पर क्या कर सकते हैं? स्वयं से शुरू करके क्या कर सकते हैं?

हम सबसे आसान कार्य से शुरू करते हैं- वह है प्लास्टिक के उपभोग को बंद

या कम करना। पर्सनल स्तर पर हम पॉलिथीन के राक्षस को अपने घर में आने नहीं देंगे। अपने घर से प्लास्टिक की छोटी-छोटी वस्तुएं को भी हमें अपनी प्राचीन जीवन शैली के तरीकों से बदलना चाहिए जैसे कि बंबू से बनी हुई कुर्सी, मिट्टी के घड़े, मिट्टी के बर्तन। बंबू, मिट्टी, पत्तों के बर्तन और पत्तों से बनी चीजें हमारी पर्सनल स्तर पर होने वाले प्लास्टिक और स्टील के उपभोग को काफी दर तक खत्म कर सकती हैं।

हम प्रोफेशनल स्तर पर क्या कर सकते हैं? स्वयं से शुरू करके क्या कर सकते हैं

सीमेंट और स्टील का उपयोग काफी बड़े स्तर पर घर और छोटी बिल्डिंग बनाने में होता है। काफी जगहों से बांस से बनी बिल्डिंग्स, बांस से बने ब्रिज के उदाहरण आ रहे हैं। कहीं-कहीं पर स्पेशलाइज बांस जो स्पेशल तरीके से बना होता है उसे स्टील के रौड की जगह भी उपयोग में लाया जा रहा है। प्रोफेशनल स्तर पर हम आर्किटेक्ट, बिल्डर्स, कंस्ट्रक्शन के लोग, और नगर पालिकाओं के जरिए अपनी भारतीय ट्रेडिशनल तकनीक और नई आधुनिक तकनीक को मिलाकर स्टील के बजाय बांस को उपयोग में ला सकते हैं। 27त्न ग्रीनहाउस गैसेस इलेक्ट्रिसिटी के उपयोग से आती हैं जैसे कि घरों को या बिल्डिंग्स को ऐसी,हीटर से गर्म-ठंडा करने से।

हम प्रोफेशनल स्तर पर क्या कर सकते हैं? स्वयं से शुरू करके क्या कर सकते हैं

अगर हम अपनी भारतीय आर्किटेक्चर की संस्कृति को देखें तो उसमें काफी ऐसी तकनीकियां हैं जिनको हम उपयोग में लेकर घरों को और बिल्डिंग को गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म रख सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर जैसलमेर में एक स्कूल है जिसमें ना ऐसी और ना ही फैन इस्तेमाल किया जाता है। उसका आकार इस तरह बनाया गया है ताकि वह हर समय ठंडा रहे और उसमें हवा आती-जाती रहे। सिविल इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर के प्रोफेशनल्स और विद्यार्थी हमारी ऐसी ट्रेडिशनल तकनीकियों का अध्ययन करके उनको उपयोग में लाने के लिए काम कर सकते हैं। सड़कों को अगर हम पॉलिथीन या छोटे-छोटे प्लास्टिक के नॉन रिसाइकलेबल कणों से बनाएं, तो हम पर्यावरण की रक्षा 2 प्रकार से कर सकते हैं। पहला कि हम सीमेंट नहीं बनाएंगे। सीमेंट ना बनाने से काफी हद तक ग्रीनहाउस गैसेस का उत्पादन समाप्त हो जाएगा। दूसरा, हमारे पर्यावरण को दूषित करने वाला, कभी ना डीकंपोज़ होने वाला, पॉलिथीन, सड़क बन कर वहां पर कैद हो जाएगा। पॉलिथीन के कणों में जो कार्बन है वह भी सड़क के अंदर कैद हो जाएगा। भारतीय परंपराओं में देखें तो हमारे आधुनिकता से बनी हुई समस्याओं के काफी हल है हमें सिर्फ जानकर और अध्ययन करके इन समाधानों को ढूंढना है। □

लेखक - आई.टी. क्षेत्र में (भारत और विदेश) व्यवसाय; 'कोटी वृक्ष सेना' नाम से पर्यावरण क्षेत्र में सेवा कार्य; पर्यावरण संरक्षण गतिविधि में कार्यरत।

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)

Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

आईपीसीसी की हालिया रिपोर्ट
जलवायु, आम-जन और कॉप-26 के लिए क्या मायने रखता है?

❑ अजय झा

आईपीसीसी ने 9 अगस्त 2021 को अपनी छठी मूल्यांकन रिपोर्ट, वर्किंग ग्रुप 1 (भौतिक विज्ञान आधारित) जारी की। रिपोर्ट में आम वैज्ञानिक सहमति के आधार पर मानव गतिविधियों को जलवायु परिवर्तन के कारक के रूप में माना गया है। साथ ही रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि अगर वैश्विक समुदाय द्वारा कठोर प्रयास नहीं किए गए तो दुनिया के तापमान में 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड की वृद्धि 2030 के दशक के अपने अनुमान से एक दशक पहले ही हो जायेगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव, एंटोनियो गुटेरेस ने इसे मानवता के लिए कोड रेड (आपात स्थिति) कहा है. वहीँ कई अन्य लोगों ने इसे स्पष्ट चेतावनी करार दिया है। वास्तव में इस रिपोर्ट में कोई नई जानकारी नहीं है। 4000 पेजों का यह रिपोर्ट 7 वर्षों के दौरान में 66 देशों के 234 विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए 14000 पियर रिव्यू आलेखों पर आधारित है। इस रिपोर्ट के तीन मुख्य संदेश हैं (i) मानव गतिविधि जलवायु संकट (और आपदाओं) का निश्चित और मजबूत वैज्ञानिक कारक है, (ii) सभी संभावनाओं में, हम 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड के लक्ष्य को खो चुके हैं, हालांकि, कठोरतम उपायों के साथ अभी भी इसे टालने की संभावना है, (iii) भविष्य में इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में और अधिक तीव्रता के साथ पहले से अधिक और बार-बार होंगे।

रिपोर्ट बताती है कि मानव गतिविधि ने अभूतपूर्व परिवर्तन (पूर्व-औद्योगिक समय की तुलना में तेजी से) करते हुए जलवायु प्रणालियों को बदल दिया है और सभी क्षेत्रों में इसका प्रभाव पहले से ही महसूस किए जा रहे हैं। सभी 5 परिदृश्यों को ध्यान में रखते हुए हमारे जलवायु भविष्य को पेश करते इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड के लक्ष्य और 2100 तक 2 डिग्री सेंटीग्रेड के लक्ष्य को पार करने की सम्भावना है. आईपीसीसी आरएस 1.5 (2018) ने भविष्यवाणी की थी कि 2040 तक 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड के लक्ष्य का उल्लंघन किया जा सकता है। सर्वोत्तम प्रयासों (SSPv-1.9) के साथ भी 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड के लक्ष्य का पार हो जाना अपरिहार्य लग रहा है। यदि सर्वोत्तम प्रयास जारी रहे, तो सदी के अंत तक तापमान में वृद्धि 1.6 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास स्थिर हो सकती है। सर्वोत्तम प्रयासों में 2050 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना, शुद्ध आर्थिक विकास के मुकाबले सतत विकास को प्रश्रय देना और स्वास्थ्य और शिक्षा के निवेश में वृद्धि शामिल हैं। सबसे खराब स्थिति में सदी के अंत तक तापमान में वृद्धि 4.4 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास हो सकती है। रिपोर्ट रेखांकित किया गया है कि भविष्य में, चरम जलवायु घटनाएं जैसे लू, अत्यधिक वर्षा, सूखा और चक्रवात पूरी दुनिया को और अधिक तीव्रता के साथ अपनी चपेट में ले लेगा। अगर उत्सर्जन में कमी के कठोर निर्णय लिए गए तो कॉप 26 से पहले आई यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण और निर्णायक हो सकती है. एक दशक से अधिक समय से जलवायु परिवर्तन संबंधी कारणों से हर साल 2 करोड़ लोग विस्थापित हुए हैं। साल 2000 से अब तक 14.2 लाख लोगों की मृत्यु हो चुकी है और 4 अरब से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं। कोविड-19 महामारी और जलवायु संकट ने एक-दूसरे को मजबूत किया और जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर खड़े लोगों के संकटों को कई गुना बढ़ा दिया है। आसानी से कल्पना कि जा सकती है कि आपदाओं के दौरान विशेष रूप से गरीब और मध्यम आय वाले देशों में शिविरों में रह रहे लोगों की निकासी और पुनर्वास के बीच कोविड प्रोटोकॉल का पालन करना कितना संभव था। हालाँकि, रिपोर्ट कई तरह के आलोचनाओं का शिकार भी हुई है। स्वतंत्र वैज्ञानिकों का मानना है कि रिपोर्ट एक राजनीतिक समझौता है, रूढ़िवादी है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कमतर आंकती है। कई लोग मानते हैं कि आईपीसीसी रिपोर्ट के आकलन में फीडबैक, पर्माफॉस्ट का पिघलाना और मीथेन रेडिएटिव फोर्स को ध्यान में नहीं रखा गया है। साथ ही यह रिपोर्ट नकारात्मक उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों के अपरीक्षित और अत्यधिक विवादास्पद समाधानों को वैध बनाता है। फिर भी दूसरों का मानना है कि पूंजीवाद या अमीरों के बजाय पूरी मानवता को दोष देना (जनसंख्या का सबसे अमीर 1% पूरी मानवता के आधे से अधिक का उत्सर्जन करता है) एक अच्छा विचार नहीं है, जो इस रिपोर्ट को गरीबों के प्रति असंवेदनशील बनाता है। नवंबर की शुरुआत में ग्लासगो में होने वाला कॉप 26 में बाजार आधारित तंत्र (पेरिस समझौते का अनुच्छेद 6) और पारदर्शिता तंत्र को अंतिम रूप देने की सम्भावना है, जिसे पेरिस समझौते के संचालन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। जलवायु कार्यकर्ता शमन में वृद्धि और शुद्ध शून्य के बजाय अल्पकालिक कार्रवाई पर जोर देने की मांग कर रहे हैं। साथ ही वित्तीय सहायता और प्रौद्योगिकी में वृद्धि और आपदा से प्रभावित देशों के लिए अनुकूलन के साथ-साथ वित्तीय सहायता में वृद्धि की मांग कर रहे हैं।

तीन दशकों की जलवायु वार्ताओं का उत्सर्जन में कमी पर शायद ही कोई सकारात्मक परिणाम हुआ है, जो यूएनएफसीसीसी के अस्तित्व में आने के बाद से 60 प्रतिशत से अधिक बढ़ गया है। आमूल परिवर्तनवादी कार्यकर्ता इस बात को रेखांकित करते हैं कि जलवायु वार्ता और कॉप जीवाश्म और औद्योगिक पूंजीवाद को जारी रखने का एक उपक्रम हैं। यह लोगों और पारिस्थितिकी को खतरे में डाल रहा हैं और बातचीत से होने वाली किसी भी सार्थक पहल को खारिज करता है। वे एक ऐसे समाधान पर जोर दे रहे हैं जो सत्ता, समता और न्याय के मुद्दों पर आधारित हो जिससे प्रकृति के साथ हमारे शोषणकारी संबंध में बदलाव आ सके। ❑

लेखक - जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ, निदेशक पब्लिक एडवोकेसी इनिशिएटिव्स फॉर राइट्स एंड वेल्यूज इन इंडिया, नई दिल्ली।

रोशनी की मुनादी

❑ डॉ. क्षिप्रा माथुर

बीते दौर से बेहतर की आस में अपनी सोच को तर्क और बुद्धि की आंच में पकाते रहे हैं हम। इस बीच जीवन की हर दुश्वारी का हल निकालने के लिए खुद का जिम्मा निभाने से ज्यादा हुक्मरानों की ओर ही हसरत से देखते रहे। कुर्सी पर काबिज़ उन लोगों की ओर जिन्हें अपने ओहदे का इस्तेमाल दबी और मैली हक़ीकत को बदलने के लिए करना था। जूझना था, बहस करनी थी, जवाब देना था, खड़ा होना और दिखना था। माथे पर शिकन के साथ। हाथ में कागज़-कलम के साथ। लहूलुहान रूह के साथ। सधी आवाज़, सनातन तहज़ीब और ज़हनियत के साथ। आज जो कुछ हम देख रहे हैं या जो कुछ अनदेखा कर रहे हैं, उसके बीच 'वसुधैव कुटुम्बकम' को नई सदी के मनोविज्ञान में ताज़ा रखने की नाकामी का दौर अब भी खत्म होता नज़र नहीं आता। आज एक होकर, हिल मिलकर चलने की कोशिशों को ताकत और ताज़गी दी है तो सिर्फ तकनीक और खुले बाज़ार ने। समाज के बिगाड़ का इल्ज़ाम देकर कितना भी हम कोस लें इन्हें लेकिन मजहब, ज़ात, नस्ल, रंग, सरहदों के फासलों की भरपाई भी इसी ने की है और लोकतंत्र में खुलेपन की दरकार को भी इसी ने संभाला है। हालांकि नीयत की दखल के बगैर, न बाज़ार का ईमान रहेगा, न तकनीक का।

आईने सामने रखकर हम किस किसका चेहरा देखने की हिम्मत रखते हैं ये अब हम पर है पूरी तरह। सब कुछ उघड़े हुए के बीच जो बड़ा जोखिम हमारे सामने है वो है हमारा हौसला कैसे कायम रहे? हमारे न होने पर, हमारी खुदाई पर किस तरह के सुबूत मिलेंगे जो हमारी कहानी कहेंगे। मार्गरेट मीड जैसी खोजकर्ताओं और महादेवी वर्मा जैसी कलमकारों के लिए इंसानियत के निशाँ ही सबसे मजबूत बयान होंगे ये साबित करने के लिए कि हमने सिर्फ मशीनें अच्छी नहीं बनाई इंसानों को भी तराशा। तो आज ये सोच लिया जाए कि कौन है आज हमारे सामने जिसे खरा मानकर उनके साथ हो लिया जाए। अपने को सौंप दिया जाए। और वो भी इतने यकीन के साथ कि जिसके बाद हमें हाथ छुड़ाने का, बिछड़ने का, खो जाने का कोई खौफ ही ना रहे। खुद को बड़ा बनाने की, लोक-मान्य बनने की होड़ में मंच पर तो हर कोई चढ़ा है लेकिन नज़र में कौन कितना उतर चुका है इसकी कीमत कौन अदा करेगा इसका अभी हममें से किसी को अन्दाज़ नहीं शायद। चाहे अमन के हों, या दिलेरी के लिए, दुनिया के बड़े-बड़े ईनामों पर भी अब सवालिया निशान लग चुके हैं। चेहरों को चमका कर देशों के बीच ज़हर की बारीक सुइयां चुभोने के पीछे जो कारोबारी कौड़ियां हैं उसकी भनक हमारी दुनिया को लगना करीब-करीब नामुमकिन है। हुकूमतों को ललकारने पर दुनिया में सराहे जाने वाले अगर हमारे दिलों पर राज करने लगे हैं तो फिर ये वक्त, बीते दौर से किस मायने में जुदा है इसे तो जितना जल्द टटोला जाए उतना बेहतर। 'डार्क वेब' से कम खतरनाक नहीं है हमारे ज़ेहन पर हमारी रज़ामन्दी लिए बगैर काबिज़ हो रहा अंधेरा। ऐसे में रोशनी की बात ही बेमानी न हो जाए कहीं इसलिए बात तो करनी पड़ेगी बार-बार नई रोशनी में।

वो रोशनी जो भले ही चन्द चिरागों के बूते हो, लेकिन धरती पर तो उस सूरज के बूते ही है जो हर दिन मिट्टी, नदी, पेड़, पहाड़ और हम सबमें जान फूंकता है। पूरी कायनात को ही उजाले की ताकत की तरह देखने वाले और हमारी सदी को अपने वैज्ञानिक प्रयोगों से सदियों आगे ले जाने वाले निकोला टेसला समाज और विज्ञान दोनों मायने में गौर करने लायक बात कहते हैं। वो ये कि सूरज तो पूरी धरती का है लेकिन इसकी हर किरण एक एक देश के आने वाला कल को रोशन कर सकती है। हर देश के पास अपनी अपनी रोशनी का ज़रिया हो सकता है। आज ऊर्जा की किल्लत से जबरदस्त जूझ रही दुनिया का पहले से अंदाज़ लगा चुके टेसला कभी अमेरिका की ज़मीन पर विवेकानन्द से भी मिले थे। उस मुलाकात के दौरान वेदांत की ओज लेने वाले टेसला ने इस बात को अपनी सबसे बड़ी शिकस्त माना कि धरती को पूरा जगमग करने का उनका ख्वाब पूरा होने से रह गया। धरती के पास पूरे सूरज जितनी रोशनी की गुंजाइश खोज चुके टेसला को इन्सानी फितरत का भी भरपूर अन्दाज़ था इसीलिए उन्होंने तंज़ किया कि यदि कभी इन्सानी जलन का इस्तेमाल किया जा सकेगा तो यही पूरी धरती की ऊर्जा का इन्तजाम कर देगी।

खुद होलोकॉस्ट की ज़्यादतियों से बचकर निकले मनोविज्ञानी विक्टर फ्रेंकल जीवन में मायने तलाशने को सबसे अहम मानते हुए रोशनी करने के लिए जलने और सहने की तैयारी करने को कहते हैं। और इससे कई पहले उजाले की अहमियत समझने के लिए बुद्ध 'अप्प दीपो भवः' तक का सफर तय करा चुके होते हैं। भीतर समाई रोशनी में नहाना ही असल हासिल है, ये जीते हुए इस हिस्सेदारी को इतना गुना कैसे किया जाए कि अपनी तमाम हदों से उबर कर हम सब इन्सानियत की मिज़ाजपुर्सी में लग जाएं। अरस्तू के बताए इथोज़, पैथोज़ और लोगोज़ से तालमेल बैठाकर अंधेरे की जुर्रत को बढ़ने न दें ये बेहद ज़रूरी पैमाना है जिस पर हमें तोला मोला जाएगा। हमारी आम समझ के तकाज़े कुछ भी कहें लेकिन विज्ञान के लिहाज़ से अंधेरा खुद क्या है? कुछ नहीं, सिर्फ रोशनी का न होना, बस इतना ही। फिर विज्ञान ये कहकर अपनी ही कही बात से पलटता भी है कि रोशनी का दायरा जिस कदर बढ़ता है, उसी तरकीब से अंधेरा भी अपने पांव पसारता है। इसके ये मायने भी निकाले जा सकते हैं कि जब जब रोशनी धुंधलाएगी अंधेरा लौटने की फिराक में होगा। इसीलिए रोशनी की लिखावटें बाकी रहें, ये फिक्र पूरी दुनिया की होनी चाहिए। एक अकेला जोत जलाता चलता है, बिना ढकोसले के चलता है, मन के मंझीरे बजाते चलता है,

अपने में मगन होकर, काम से काम रखकर, लेकिन उसकी ओर कोई झांकता भी नहीं। उनसे कहेंगे तो वे ये कहकर आगे बढ़ जाएंगे कि किसी को परवाह नहीं तो ना सही। हमें इस बात की लगन है कि हम क्या कर रहे हैं। ये हमारे अपने सुकून की राह है। जो पहले से रोशन है उसके लिए दूसरी दियासलाई का जलना बेमानी है। ये बात याद दिलाने वाले आदिशंकराचार्य भी उस मलेच्छ माने जाने वाले के आगे नतमस्तक हुए जिसने अपने चार कुत्तों के साथ उनका रास्ता रोककर पूछा था कि आपके सामने से कौन हटे, जिस्म या रूह? सवाल किया कि क्या सूरज की परछाई गंगा के पानी और पोखर के गन्दले पानी में एक ही रहेगी? पूछना यानी खुले रहना, खुले रहना यानी जागे रहना। भले ही पूछने वाले गुमनाम रह जाएं लेकिन सवालों का सामना करने वाले तो जिन्दा रहेंगे ये तय है। सवालों से छिपने वाले खुद कैसे ढल जाएंगे, दर्ज़ होने से रह जाएंगे इसका कोई मलाल करने वाला भी बाकी नहीं रहेगा।

ऋग्वेद के बृहदारण्यकोपनिषद में लिखा श्लोक 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।' झूठ से सच की ओर, अंधकार से उजाले की ओर और मौत से अमर होने तक के रास्ते से गुज़रने की सोच थमाता है। इसके परे है भी क्या। इसके सिवाय चारा भी क्या। चाहे टिमटिमाती ही दिखे, लेकिन लौ का पीछा करते हुए ही आगे बढ़ना है। तब तक जब तक वो अपनी पूरी पहचान के साथ कस कर आपका हाथ न थाम ले। सीने से न लगा ले। खुद में न भर ले। फिर ये भरना ऐसा ही होगा कि कोई रोम खाली नहीं रहेगा। कठोपनिषद में कहा 'य एष सुप्तेषु जागर्ति काम कामं पुरुषो निर्मिमाणः' यानी सोते हुए में जागते रहने वाला ही जगाए रखने का माद्दा रखता है। वही रोशनी पैदा करता है। तो क्या जिम्मा दो तरफा न होकर अकेला अपना ही रहेगा। ये तो है ही कि अपनी मौजूदगी का अहसास पहले खुद को हो, फिर तो बाकी महसूस कर पाएंगे।

आने वाली दुनिया की बड़ी तस्वीर क्वांटम ज्ञान के बूते भी तामीर होगी। इसे खोजने वाले मैक्स प्लांक का ये कहना कि जिसे साबित ना किया जा सके उसकी मौजूदगी नहीं हो सकती और वैदिक गणित के दिग्गज शंकराचार्य का ये बयान कि जो साबित किया जा सके उसके बारे में पूरे यकीन के साथ कतई नहीं कहा सकता कि वो असल है। मौजूद है। दो सिरे लगते हैं ये सुनने में मगर आखिर में दोनों के बयान एक ओर ही लौटते दिखते हैं कि विज्ञान हमारे जीवन की हर करामात की तह में नहीं जा सकता, वजह इतनी सी कि हम जिस करिश्मे को जानना चाहते हैं हम खुद ही उसका हिस्सा हैं। कुछ जान पाएंगे, बहुत कुछ नहीं भी। ये भिड़न्त बाकी रहनी चाहिए। इसके आगे की बात ये भी है कि जहां-जहां जानने की कुलबुलाहट है, वहां कुछ न कुछ हरकत होगी ही। ऋषि कणाद का लिखा वैशेषिका-सूत्र भी यही कहता है कि है कि देखने वाले के नज़रिए से ही दुनिया में सब ज़ाहिर होता है। यानी सोच की ताकत है सब। क्वांटम का असल यही है। एक ही वक्त पर कई जगह खुद को ज़ाहिर कर ये आपको हैरान भी करेगा, इसीलिए क्वांटा आने वाले दौर में बड़ी तब्दीलियों की मुनादी है। तब तक, इसे इस तरह देखें कि जहां-जहां उजाले की हसरतें हैं वहां-वहां अंधेरे को शिकस्त मिलनी तय है। और रोशनी की अपनी रफ्तार इतनी तेज़ है कि जो भी इससे मुकाबला करेगा, वो आखिरकार अपनी लौ और लपट सहित खुद ही रोशनी में तब्दील हो जाएगा। फिर बाकी क्या रहेगा इंसानियत की लिखावटें मोहब्बतों की इबारतें सबमें समाए हुए सब। □

लेखक - दो दशक से पत्रकारिता और पत्रकारिता प्रशिक्षण से जुड़ी। मुख्यधारा की पत्रकारिता में कैंपेन एडिटर के बतौर समाज-विकास के मुद्दों पर नीतियों-सोच पर असर डालने वाले अभियानों की संचालक और अमेरिका के ग्लोबल स्ट्रेट व्यू अखबार की कंसल्टिंग एडिटर और राष्ट्रीय अखबारों में नियमित लेखन। आईआईएस डीम्ड विश्विद्यालय में सलाहकार।

नर्मदा अंचल के वृक्ष

गुरार

शिरीष, कीन्ही, काला सिरसत
EAST INDIAN WALNUT, RATTLE POD Albizia lebbeck
बबूल उप कुल - Mimosoideae

❑ डॉ. सुदेश वाघमारे

स्वभाव - देशभ वृक्ष अनुकूल प्रकृति मिलने पर 20 मीटर ऊंचाई तक पहुँचता है। वनों के अलावा शहरों एवं गांवों में भी पाया जाता है।

प्राकृत वास - लेटराइट, मृदा, काली, कपासी मृदा तथा दुमट मृदा को पसंद करता है परन्तु वृद्धि के लिए जल निकास अच्छा होना चाहिये।

विवरण - छाल, काली, खुरदुरी, अनियमित दरारों वाल है।

पत्तियाँ - संयुक्त द्विपक्षकार, 40 से.मी. तक लम्बी, पर्ण वृंत पर एक बड़ी ग्रंथि जो इस पेड़ की विशिष्ट पहचान भी है। उप पक्ष 5 से 15 जोड़ों में, पत्रक 15 से 30 जोड़े में पाया जाता है। जनवरी से मार्च तक पतझड़ करता है।

पुष्प - पीले, छोटे, मुंडक, पुष्पक्रम में पुंकेसर लम्बे।

फल - हरे रंग की चपटी फली जो बाद में भूरी और कत्थई हो जाती है। फली में 8से 10 जून में परिपक्कन सितम्बर में।

औषधीय उपयोग - छाल, पत्ते, गोंद और फूलों में औषधिय गुण है। इनसे कुष्ठ रोग, बवासीर, नेत्र रोग और उदर रोगों का इलाज किया जाता है।

आई.यू.सी.एन. - खतरे के नजदीक

रसायन शास्त्र - सेपोनिन, एकिनोसायटिक एसिड भोपाल में कहाँ देखे- एकांत पार्क

यह उन महत्वपूर्ण वृक्षों में शामिल है जिनका विवरण भारतीय धर्मग्रंथों में हजारों साल से मिलता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ''शिरीष के फुल'' नामक ललित निबंध में इसका रोचक वर्णन किया है। आचार्य ने बजरिये शिरीष कालिदास, कबीर, तुलसीदास और कर्णट की रानी से लेकर वात्स्यायन के कामसूत्र की यात्रा कराकर महात्मा गांधी पर समापन किया है। जिन्हें अंग्रेजी साहित्य पर अनावश्यक गर्व करने और हिंदी को हेय समझने का भ्रम हो उन्हें यह निबंध जरूर पढ़ना चाहिये। इसका वानस्पतिक नाम Albizzia इटली के प्रकृतिविद । Albizzia के नाम पर और lebbeck इजिप्ट के एक शहर के नाम पर रखा गया है जहां यह पथ रोपण में बड़ी संख्या में लगाया गया था। ऊंट और भेड के लिए आदर्श चारा होने तथा भक्षरण रोकने के लिए भी यह उपयोगी है इसलिए कभी राजस्थान में इसका खूब रोपण किया गया। सूखी फलियाँ मंद हवा चलने पर भी बहुत तेज आवाज करती हैं इसलिए आंग्ल भाषा में 'वीमेंन टंग' भी इसे कहा जाता है। ❑

लेखक - सेवानिवृत्त वन अधिकारी,
स्वतंत्र सलाहकार, राष्ट्रीय-अंर्तराष्ट्रीय
संस्थाओं से जुड़े हैं।

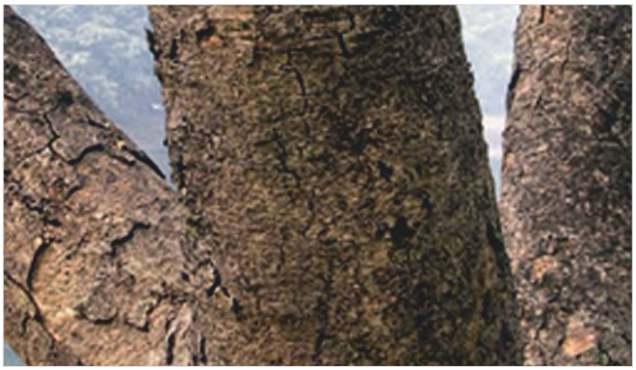

परिवर्तन के छोटे कदम ईको दोस्त के संग...

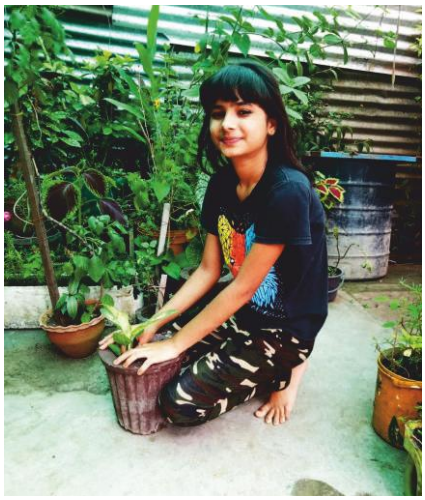

डिण्डोरी की अनुष्का और आदित्रि पुत्री श्री सुधीर तिवारी ने अपने घर में रखी पुरानी वस्तुओं जैसे- कप, मग, तेल के डब्बे और single use प्लास्टिक का reuse कर घर को किया हरा-भरा।

निष्ठा कटारे कक्षा 4 केंद्रीय विद्यालय मंडला और दक्ष कटारे सरस्वती शिशु मन्दिर, मण्डला कक्षा 1 (पुत्री और पुत्र श्री नीलेश कटारे) घर की अनुपयोगी वस्तुओं का पुनः उपयोग (Reduce, Reuse Recycle) पौधे रोपने और ईको ब्रिक्स बनाकर स्वस्थ पर्यावरण के लिए अपनी ओर से प्रयास कर रहे हैं।

अमृतलाल वेगड़

(1928-2018)

तृतीय पुण्य स्मरण

(6 जुलाई 2021)

अपनी तमाम कृतियों से मैं एक ही संदेश देना चाहता हूं : इस पवित्र और सुंदर नदी का हम सम्मान करें। नर्मदा सबके लिए है लेकिन उसके लिए नहीं जो उसे गंदी करता है।

www.narmadasamagra.org RNI No. - MPHIN/2011/38276

"

'वर्ल्ड रिवर डे' जब आज मना रहे हैं तो इस काम से समर्पित सबकी मैं सराहना करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।
लेकिन हर नदी के पास रहने वाले लोगों को, देशवासियों को मैं आग्रह करूँगा कि भारत में, कोने- कोने में साल में एक बार तो नदी उत्सव मनाना ही चाहिए।

"

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754